आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" मार्च 2025

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 36
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

। वर्ष –26 । अंक–3 । फाल्गुन – चैत्र स.2081 । मार्च 2025

होली की सभी

सामाजिक बंधुओं को

हार्दिक – हार्दिक बधाई

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

HUMBLE TRIBUTE

Late Mr. Kailash Chaturvedi

(13 Nov. 1951 - 31 Jan 2025)

Ex. Vice-president & Margdarshak
Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha

Say not in grief 'He is no more' But in thankfulness he was.

You will always remain the profound source of love affection and guidance for us and an integral part of our life forever.May his blessed soul rest in peace.

Mournful

Son & Daughter In Law:
Ashwani-Jyoti

Daughter & Son In Law:
Deepti - Shashank
Nimisha - Tathagat

Grand Children:
Kaustubh, Shivika, Shivank, Ridhima, Shambhavi

Establishments

Chaturvedi group of companies.

- **PROPERTY WALA** (Real Estate Consultant)
- **SAI LIFE LINE INSURANCE HOUSE**

(र.क्र. 3082)

विनम्र श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती मंजू चतुर्वेदी

पत्नी श्री हरी नाथ चतुर्वेदी (मथुरा)

जन्म : 17 दिसंबर 1931, देहावसान : 12 फरवरी 2025

शोकाकुल :

पति: हरी नाथ चतुर्वेदी

पुत्र: हर्ष वर्धन चतुर्वेदी

पुत्र वधु : नूतन चतुर्वेदी

पौत्री/ दामाद : स्वाति एवं ध्रुव

पौत्री : सुकृति

एवं समस्त मथुरा (गोल पाड़ा)परिवार,

मिश्रा परिवार काशीभवन/ जयपुर एवं बुलंदशहर

निवास : A -137; सेक्टर-21, जल वायु विहार ; Noida

Contact No. 8586982805, 7838352726; 9891028844

50 वीं वैवाहिक वर्षगांठ

श्री विजय कुमार चतुर्वेदी एवं श्रीमती सुनीता चतुर्वेदी

पुत्र : स्व. श्री हनुमान प्रसाद चतुर्वेदी (फरौली)

पुत्री स्व. श्री शंभू नाथ चतुर्वेदी (पुरा)

को उनकी **50वीं** वैवाहिक वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएँ।

पचास वर्षों का यह सुंदर सफर आपके प्रेम, समर्पण और विश्वास का प्रतीक है।
आप दोनों का साथ यूँ ही अनगिनत वर्षों तक बना रहे,
सुख, समृद्धि और स्वास्थ्य से आपका जीवन सदा भरपूर रहे।
सामेश्वर परिवार की ओर से आपको ढेरों शुभकामनाएँ एवं मंगलकामनाएँ!

पुत्री-दामाद : कीर्ति-दीपक, अंजलि-सौरभ, शिप्रा-आनंद
पुत्र-पुत्रवधू : पीयूष-रिंकी

प्रेषित: जितेंद्र चतुर्वेदी - संजय चतुर्वेदी
एवं समस्त सामेश्वर परिवार फरौली

"रंगों का त्योहार, खुशियों की बहार,
होली का ये पर्व, लाया प्यार बेशुमार।"

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.

होली सिर्फ रंगों का त्योहार नहीं,
बल्कि खुशियों और प्यार का संगम है।
जैसे यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है,
वैसे ही **रेखा गैस एजेंसी** हर घर की रसोई में सुरक्षा,
सुविधा और मुस्कान के रंग भरती है।
हर महिला की मेहनत को सराहते हुए,
हम उनका जीवन आसान
और खुशहाल बनाने का वादा करते हैं।

"रेखा गैस एजेंसी की ओर से
सभी को रंगों से भरी,
सुरक्षित और सुखद होली
की शुभकामनाएं!"

दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001
(0257) 2221095 | 2221195 | 2225195 | 2228495.
rekhagas20032003@rediffmail.com

रेखा गॅस एजन्सी

श्रद्धांजली

जन्मतिथि -
13 नवंबर 1947

गोलोकगमन -
31 जनवरी 2025

स्मृतिशेष श्री कैलाश चंद्र चतुर्वेदी

सुपुत्र स्मृतिशेष स्व. रोशन लाल चतुर्वेदी
पूर्व उपसभापति व मार्गदर्शक मंडल
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

श्रद्धावनत

सभापति :- श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, भोपाल

उप-सभापति :- श्री मुनीन्द्र नाथ (नोयडा), श्री पंकज (मुम्बई), श्रीमती आभा (नागपुर), डा. कुश (इटावा), श्री विनोद (गुरूग्राम), श्री सुमंत (आगरा), श्री अंशुमान (जयपुर)

सचिव :- श्री शशांक (भोपाल)

सह-सचिव :- श्री आशुतोष (कानपुर), श्री करूणेश (ग्वालियर), श्री गोविन्द (जयपुर), श्री अभयराज (गुरूग्राम), श्री मनीष (कोटा), श्रीमती बबीता (लखनऊ), श्री संजय (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष :- श्री ज्ञानेन्द्र (साहिबाबाद)

सम्पादक :- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र (गाजियाबाद)

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	9
संपादकीय	10
होली	11
आयुष्मान स्वास्थ्य बीमा योजना	14
मूली खाने से होने वाले फायदे	15
अपना मुकद्दर	16
भाई दूज	18
ब्रज का होलिकोत्सव	20
राशिफल वर्ष 2025 (संवत्सर 2082)	22
होली	27
शाखा समाचार	28
समाज समाचार	30
बिछड़े स्वजन	30

अंक 3
मार्च 2025, वर्ष - 26

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak2024.chandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण सहयोगी : विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी समिति 2024–2027

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक:- डा० सतीश जी(नागपुर), श्री भरत जी (पूर्व सभापति) भोपाल,श्री आर.आर.जी (पूर्व सभापति) मुम्बई, श्री कमलेश जी पाण्डे(पूर्व सभापति) नोएडा, डॉ. प्रदीप जी (पूर्व सभापति) दिल्ली, ले. जन. विष्णुकांत जी(नोएडा), श्री विकास जी (कानपुर), श्री संतोष जी चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र जी चौबे (गोंदिया), श्री महेश जी (दिल्ली)।

परामर्शदाता मण्डल:- श्री अविनाश जी (कानपुर), श्री कैलाश जी(कासगंज), डॉ. ऋषभ जी (देहरादून), श्री उपेन्द्र जी पाण्डे (कोलकाता),श्री भरत कुमार जी (रिषड़ा),श्री शिव जी (कोटा), श्रीमती बीना जी मिश्रा (मैनपुरी/आगरा), डॉ. निखिल जी (आगरा)

सभापति:- श्रीमती ऊषा जी भोपाल

उप-सभापति:- श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज जी (मुम्बई), श्रीमती आभा जी (नागपुर), डॉ. कुश जी (इटावा), श्री विनोद जी (गुरूग्राम), श्री सुमंत जी (आगरा), श्री अंशुमान जी (जयपुर)

सचिव:- श्री शशांक जी (भोपाल)

सह-सचिव:- श्री आशुतोष जी (कानपुर), श्री करूणेश जी (ग्वालियर), श्री गोविन्द जी (जयपुर), श्री अभयराज जी (गुरूग्राम), श्री मनीष जी (कोटा), श्रीमती बबीता जी (लखनऊ), श्री संजय जी (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष:- श्री ज्ञानेन्द्र जी (साहिबाबाद)

सम्पादक:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र जी(गाजियाबाद)

मा. कार्यकारिणी सदस्य गण:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), डा० राकेश जी (मथुरा),श्री मनीष जी (हरदोई), श्री लोकेन्द्र जी (गाजियाबाद), श्री भुवनेश कुमार जी चौबे (गोंदिया), श्री अजय जी चौबे (भोपाल), श्री राकेश कुमार जी 'चुनचुन' (बरेली), श्री विशाल जी (आगरा), श्री राहुल जी (मैनपुरी) श्री प्रदीप जी 'संजू' (गाजियाबाद), श्री राजीव जी (अहमदाबाद), श्री विवेक जी (मुम्बई),श्री विपिन जी (लखनऊ), श्री मनीष जी (दिल्ली), श्री ललित जी (लखनऊ), श्रीमती विनीता जी (देहरादून), श्री कृष्ण बल्लभ जी (बिलासपुर), श्री संजय जी मिश्रा (कानपुर), श्री सुदीप जी (फिरोजाबाद), श्री अभिषेक जी (ग्वालियर), श्री आशीष जी 'रानू' (आगरा), श्री प्रवेश जी (कानपुर), श्री आशीष सुभाष जी (आगरा), श्री हर्षमोहन जी (आगरा), श्री आलोक जी (कोटा), श्री सतेन्द्र जी (नोयडा), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), श्री नवीन जी (जहांगीरपुर/लखनऊ), श्री सौरभ जी (लखनऊ), श्रीमती अंजू जी (मुम्बई), श्रीमती अर्चना जी (जयपुर), श्रीमती इंदु जी (नोयडा), श्री नवीन जी (चेन्नई), श्री हितेष जी (पुरा), श्री तनुज जी चौबे (नागपुर), श्री अरूण जी (जयपुर), श्री हर्ष कमल जी (बनारस), श्रीमती अलका जी (करनाल), श्री विमल जी (नोयडा), श्री मनोज जी (सागर), श्रीमती क्षमा जी (ग्वालियर), श्री प्रवेश जी (चांपा,छ0ग0), श्री कृष्णकांत जी (हैदराबाद), श्रीमती मीता जी (कानपुर), श्री अनुराग जी 'बब्बल' (आगरा), श्री मधुपम जी (मुम्बई), श्री धनेश जी (साहिबाबाद), श्री कैलाश जी(देवास), डॉ. मीनाक्ष जी (भोपाल), श्री मुकेश गिरीश जी पाण्डे (कोलकाता), श्री गगन जी (पुरा)

स्थाई आमंत्रित:- श्री मनोज जी (बैंगलोर) , श्री पदम जी (लखनऊ), श्री अशोक जी (फरीदाबाद), श्री गिरधारी जी (जयपुर), श्री कमलेश जी रावत (कोटा), श्री विपिन जी पाण्डे (गाजियाबाद), श्री राजेन्द्रनाथ जी (प्रयागराज), डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद), डॉ. कपिल जी (आगरा), श्री अनिल जी (भोपाल), श्री अरविंद जी (दिल्ली) , श्री दिनकर राव जी (फरौली), श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर)

विशेष आमंत्रित:- श्री मधुकर जी पाठक (आगरा), श्री नीरज जी (चक्रधरपुर), श्री कौशल जी (दिल्ली), श्री अम्बर जी पाण्डे (भोपाल), श्री साकेत जी (मैनपुरी), श्री दीपक जी (लखनऊ), श्रीमती तृप्ति जी (पटना), श्री अंकुर जी (कटनी), श्री शैलेन्द्र जी (उचाड़), श्री अनुराग जी 'टिंचू' (कानपुर), श्रीमती शिखा जी पाठक (थाणे), श्रीमती अमिता जी (लखनऊ), श्री उमेश जी (बुलंदशहर), श्री ललित जी (जयपुर/नोयडा), श्री श्यामलाल जी (भिण्ड), श्री आलोक जी (जयपुर), श्री संजय जी (लखनऊ),श्रीमती मधु जी (देहरादून), श्री धर्मेन्द्र जी (कानपुर), श्री मनीष जी (इटावा), श्री पीयूष जी (पूना), श्री जितेंद्र जी (पूना), श्री मधुर जी (बैंगलोर), श्री यदुवेश जी (पुरा/लखनऊ), श्री नवीन जी (बैंगलोर), श्री दिलीप जी (हरिद्वार), श्री शैलेन्द्र जी (फिरोजाबाद), श्री प्रवीण जी (हैदराबाद), श्री नीलकमल जी (कलकत्ता), श्री मुकेश जी (तरसोखर/रिसड़ा), श्री शैलेन्द्र जी (फरीदाबाद), श्री नरेश जी (भोपाल), श्री विश्वास जी (भोपाल), श्रीमती वंदना जी (रिसड़ा), श्री प्रशांत जी (मथुरा), श्री नरेन्द्र कुमार जी चौबे (ग्वालियर), श्री भूषण जी (साहिबाबाद), श्री दुर्गेश जी (जयपुर), श्री अनुराग जी (गुरूग्राम), श्री विशाल जी (दानपुर) श्री प्रवीण जी 'छौना'(फरौली), श्री लोकेन्द्र (कानपुर), श्री नलिन जी, (नोएडा), श्री हरीश जी, (भोपाल)

मूल निवास प्रकोष्ठ:- श्री गगन जी (पुरा) संयोजक, श्री जय चतुर्वेदी नानू फरौली, श्री गोविन्द चतुर्वेदी (जहांगीरपुर), श्री सौरभ "आशू" (पुरा), श्री समर्थ (होलीपुरा), श्री शैलेन्द्र (फरौली), श्री मधुर (पुरा), श्री धर्मेश चतुर्वेदी (पिनाहट)।

शाखा सभा प्रकोष्ठ:- 1) ले. जन. विष्णु कांत जी नोएडा, 2)श्री विवेक जी, मुंबई 3)श्री अजय जी,लखनऊ 4) श्री अजय जी तिवारी, ग्वालियर 5)श्री सुनील जी, जयपुर 6) श्री विनय जी,कोटा 7) श्रीमती नीतिका जी, गुरुग्राम 9) श्री प्रदीप जी,गाजियाबाद 10) श्री सुशील जी, फरीदाबाद 12) श्री मुकेश जी,आगरा (रजि.) 13) श्री संजय जी, अहमदाबाद 14)श्री पंकज जी, हरदोई, 15) श्री भूपेन्द्र जी, जहांगीरपुर सभा 16) श्री गौरी शंकर जी,समाज,फरौली 17) श्री महेश जी, देहली सभा 18) श्री शैलेंद्र जी, मथुरा सभा 19) श्री ऋषभ जी, देहरादून 20) श्री राजेन्द्र जी, फर्रुखाबाद सभा, 21) श्री एम. बाबू, मैनपुरी सभा, 22) श्री समीर चतुर्वेदी, पटना सभा, 23) डॉ. अरुण चतुर्वेदी, नागपुर सभा, 24) दिलीप चतुर्वेदी, हरिद्वार सभा

युवा प्रकोष्ठ:- (1) श्री मधुपम जी- मुम्बई (संयोजक) (2) श्री खगेश जी (कोलकता) सह-संयोजक (3) श्री नवीन जी (मथुरा) (4) श्री प्रमेन्द्र जी (ग्वालियर) (5) श्री आशीष जी (कोलकाता) (6) श्री नमन जी (फिरोजाबाद) (7) श्री सुनील जी (जयपुर) (8) श्री हेमंत जी (कोलकाता) (9) श्री नमन जी (लखनऊ) (10) श्री दिवस जी (लखनऊ) (11) श्री शशांक जी (जमुआ रामगढ़)

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ:- (1) श्री विवेक जी-संयोजक (मम्बई)

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ : अरविंद चतुर्वेदी दिल्ली संयोजक, संजय चतुर्वेदी फरीदाबाद

चिकित्सा प्रकोष्ठ:- (3) डॉ. मीनाक्ष जी-संयोजक (भोपाल)

उद्यमिता प्रकोष्ठ:- अजय चौबे, भोपाल

महिला प्रकोष्ठ:- श्रीमती शिवांगी जी (संयोजक), श्रीमती अनुपमा जी (उप संयोजक)

महासभा कार्यालय: 405/406, चिरंजीव टावर नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110019

।। अपनों से अपनी बात।।

● ऊषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

आदरणीय बंधुवर एवं भगिनी
सादर पालागन

"रिश्तो में पारदर्शिता इतनी हो कि सच पूछने की जरूरत ना पड़े। और भरोसा इतना हो कि झूठ बोलने की जरूरत ना पड़े"

भारतीय संस्कृति एवं हिंदू धर्म का सबसे बड़ा एवं पावन धार्मिक उत्सव महाकुंभ करोड़ों लोगों की धार्मिक आस्था की तृप्ति करके समाप्त हो गया। और विश्व के सामने भारतीय संस्कृति की विशेषता का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत कर गया।

समय के साथ चलना चाहिए यह समय की मांग है ।लेकिन अपनी संस्कृति और मर्यादा के साथ कदम से कदम मिलना चाहिए। अपने समाज में एक आदर्श शादी की सूचना प्राप्त हुई। वर पक्ष पकायत से लेकर विवाह तक एक आदर्श समाज के सामने प्रस्तुत किया। मिठाई तथा शगुन के रुपए लेकर पक्कायत की तथा शादी में भी दहेज की सामग्री तथा कुछ भी नहीं लिया। वधू पक्ष पैर पखराउनी के रुपए भी बहुत मुश्किल से आग्रह करने के पश्चात लिए। सारे संस्कार अपनी रीतऔर परम्परा अनुसार ही किए गए। संस्कार सभी थे लेकिन दिखावा कुछ भी नहीं। विवाह एक पवित्र बंधन है अतः हम सभी को यह मनन करना चाहिए हमारी हमारी मर्यादाओं की सीमा का उल्लंघन ना हो।

नाम में लिखते ना नाम लिखना वर पक्ष वाले होली पुरा के तथा वधू पक्ष वाले पिनाहट के है। एक बार हमें पुनः विचार करना पड़ेगा कि हम अपने संस्कार एवं परंपराओं से दूर तो नहीं होते चले जा रहे। हमारी पहचान जिन संस्कारों के कारण थी वह संस्कार जीवित रहे।

होली का रंगारंग त्योहार आने वाला है। भदावर के ग्रामीण क्षेत्रों में ढ़ोलकों की थाप और रसिया एवं फाग प्रारंभ हो चुके हैं। रसिया गायन की मस्ती और होली का गायन की राग का वास्तविक आनंद ग्रामीण क्षेत्रों में ही प्राप्त होता है। टेसू के फूलों का प्राकृतिक रंग से होली खेलने का अलग ही आनंद है। परेवा के दिन गांव में घूमने वाली चौपई मैं नीले पीले लाल चेहरे के साथ मस्ती में झूम झूम के गाते फाग व्हाट्सएप में उल्लास और उमंग का वातावरण पैदा करते हैं। जो वर्ष भर याद रहती है तथा पुनः है होली पर गांव जाने की तैयारी प्रारंभ हो जाती है। नवयुवक तथा किशोर बालक यह आनंद प्राप्त करने के लिए बड़ी संख्या में आने लगे हैं यह प्रसन्नता की बात है कि वह अपने जड़ों की ओर लौट रहे है। इस वर्ष पिनाहट में भी सामूहिक होली का कार्यक्रम आयोजित होगा। पिछले वर्ष ही इस बात की घोषणा पुरा में आयोजित कार्यक्रम में की गई थी। विभिन्न नगरों में तो होली मिलन आयोजित होती है जो एक सहचर की भावना का प्रतीक है। कुछ नगरों में महासभा की शाखा सभाओं का नवीन गठन हुआ है। यह प्रसन्नता की बात है। महासभा के पदाधिकारी गांव तथा छोटे नगर में भी शाखा सभाओं का गठन प्रारंभ कर दिया है । महासभा के राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आगामी बैठक लखनऊ माथुर चतुर्वेदी मंडल ने 23 मार्च को आयोजित की है। महासभा उनको धन्यवाद ज्ञापित करती है।

रजिस्टर्ड डाक के मूल्यों में भारत सरकार के डाक विभाग के शुल्कों में संशोधन किया गया है। अब प्रतिवर्ष रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका भेजने का शुल्क 400/- देना होगा। अतः रजिस्टर्ड पत्रिका भेजने से पूर्व शुल्कों के बारे में संपादक जी से जानकारी प्राप्त कर लें।

विगत दिनों में हमारे परिवार के बहुत से सदस्य सदा के लिए हम लोगों से बिछड़ गए। ऐसी सभी पुण्य आत्माओं को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं तथा परिवार जनों को धैर्य धारण करने की ईश्वर से कामना करती हूं। महासभा के पूर्व उपाध्यक्ष आदरणीय कैलाश चंद्र चतुर्वेदी (सिकंदरपुर/कासगंज) का निधन एक अपूर्ण क्षति है। आप वर्तमान महासभा में परामर्श मंडल सम्माननीय सदस्य थे।

होली की शुभकामनाओं के साथ सादर पालागन।

दिलीप सिकंदरपुरिया

संपादकीय

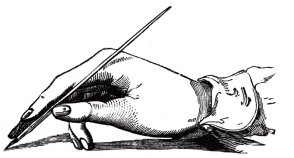

चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार में सभी का हार्दिक अभिनन्दन एवं सादर पालागन्! प्रयागराज महाकुंभ स्नान के बाद सनातनी समाज में अध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जागरण का प्रचार प्रसार हो रहा है। लगभग 57 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने संगम पर डुबकी लगाई, जिसमें लगभग 83 देशों से 92 लाख से अधिक श्रद्वालु भी शामिल है, प्रयागराज ही नहीं अयोध्या, काशी, विंध्याचल, चित्रकूट में अकल्पनीय रिकॉर्ड तोड श्रद्धालुओं ने दर्शन किए, मथुरा वृन्दावन भी श्रद्वालुओं की संख्या में पीछे नहीं रहा। लेकिन इस अध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना को बनाए रखना अब हम सभी की जिम्मेदारी है। मार्च में ही हम सब सामाजिक समरसता का प्रमुख त्योहार होली मनाएंगे।आज से पंद्रह बीस साल पहले रंग गुलाल खेलने के बाद चैत्र अष्टमी तक हम सब अपने पड़ोसी, दोस्त, रिश्तेदारों के यहां होली मिलने एक दूसरे के घर अवश्य जाते थे।अब इस सनातनी चेतना के जागरण में ही पुरानी परम्परा को जीवित कर मिलना जुलना शूरु करें, केवल मोबाइल पर संपर्क एवं संदेश कर मात्र औपचारिकता निभाने का ढोंग न करें। हमारी सामाजिकता से रोजमर्रा जिंदगी में अकेलापन एवं तनाव से मुक्ति मिलती है, आधुनिक भौतिक युग में घबड़ाहट, व्यग्रता,डर, बैचेनी तथा आत्महत्या, आत्मविषाद के साथ ही अनेक शारीरिक एवं मानसिक समस्याएं तथा रोग के लिए अकेलापन एवं तनाव प्रमुख कारण बन सकतें हैं, महाकुंभ में सभी धार्मिक वक्ताओं ने हिंदू समाज में सामाजिक सहभागिता, समरसता और समागम बढ़ाने का आग्रह किया, उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि हर सनातनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी मानकर अपनी दिनचर्या में धार्मिक उपासना को अवश्य शामिल करेगा।

सामाजिक चेतना के प्रवाह को जारी रखते हुए आगामी 30 मार्च को चैत्र नवरात्र के साथ ही हमारा

हिन्दू नवसंवत्सर 2082 वि

का भी आगाज हो रहा है। सभी सनातनी उस दिन सुबह स्नानादि करके सर्वप्रथम मंदिर जाकर अपने आराध्य के दर्शन कर आशीर्वाद ले,उस दिन सत्संग एवं प्रवचन में सक्रिय भूमिका निभाएं। अपने घर पर धर्म पताका फहराएं , शाम को रंगोली एवं दीपमालिका से घर को सुसज्जित करें। साधु-संतों ने विश्वास व्यक्त किया सभी एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप से बधाइयां देकर अभिवादन करते हुए नूतन संवत का अभिनंदन एवं स्वागत करेंगे।हम लोगों को सनातन संस्कृति एवं धर्म के उत्थान का जो परिवेश बना है,उसको विकसित करने के लिए हम सब को अपनी दिनचर्या में कुछ धार्मिक उपासना पद्धतियों का पालन अवश्य अपनाना चाहिए।

हरि इच्छा सोचते ही हम हर कष्ट या समस्या को सहन कर लेते हैं।आज हमारे जीवन में तनाव एवं बैचेनी का प्रमुख कारण अपनी आस्था और परम्परा को भूलना हैं। जीवन में तनाव को दूर कर आनंद की अनूभूति प्राप्त करने हेतु हमको धर्म-कर्म के साथ ही योजनाबद्ध लक्ष्य का निर्धारण कर उसे प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए....

हमको प्राथमिकता के साथ : 1.स्वास्थ्य, 2.वित्तीय, 3.वयक्तिगत एवं 4.सामाजिक लक्ष्य

को निर्धारित कर सफल होने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

1.लक्ष्य को स्पष्ट और विशिष्ट बनाएं।

2.लक्ष्य प्राप्ति के लिए समयबद्ध योजना बनाएं।3.नियमित अंतराल पर प्रगति की जांच करें।

4.धैर्य और स्थिरता को बनाए रखें।

लेकिन हरसंभव प्रयास के बाबजूद असफल होने पर भी अध्यात्मिक संस्कार एवं आस्था के कारण ही हमारा विश्वास बना रहता है ---

कर्मेण्ये वाधिकारास्ते मां फलेषु कदाचिन्

पत्रिका के लिए आपके लेख एवं सुझाव का सदैव स्वागत है।

होलिकात्सव, नवसंवत्सर 2082 वि०एवं चैत्र नवरात्र पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित....

होली

- लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी, (फरौली/गाजियाबाद)

होली त्यौहार अपने समाज में एक विशिष्ट स्थान रखता है। वृज क्षेत्र में होली का गायन प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। जिसकी रागों का क्रम है, जो पीलू, काफी से आरम्भ होकर धमार, लेह, पैंडा, दीपचन्दी, चाल, रसिया, विहाग, भैरवी आदि रागों में गायी जाती है। होली का यह दीर्घकालीन त्यौहार माघ शुक्ल पंचमी से प्रारम्भ होकर फाल्गुनी पूर्णिमा-चैत्र कृष्ण प्रतिपदा तक चलता है।

होली गायन बसन्त पंचमी के दिन प्रारम्भ होता है और ढोलक, हारमोनियम, मंजीरें की थाप पर होली गायन के स्वर स्वतः ही उठने लगते हैंः

आयो बसन्त कहौ उन हरि सों, बौरे, अम्ब बन फूली है सरसों।।

फूले कमल उमगे दोउ जुबना, गयो चितचोर कहाँ या ब्रज सों।।

औरन सों वे हँसत खिलत हैं, हम तरसें वाके दरसन बरसों।।

ऐसौ मन होय, छुड़ाय लाऊँ सजनी, मोहन प्यारे कों कुबजा के करसों।।

राह चलन दुर्लभ भयौ सजनी, अजहुँ न भेंट भई उन हरि सों।।

कृष्ण गोपियों के संयोग के शालीन चित्रण हैं इसमें, कृष्ण विरह जैसी मर्मस्पर्शी वेदना हैः

जो तुम श्याम कूबरी से राजी, कूबरी आजु कहाँ तें ल्याऊँ।।

कालिन्दी सों जल भरि ल्याऊँ, प्रेम सहित असनान कराऊँ।।

अतर फुलेल मलौं तेरे मुख पै, घिसि-घिसि चन्दन अंग लगाऊँ।।

चंदन काटि कें पलँग बनाऊँ, रेशम बाननि तै बनवाऊँ।

तोसक तकिया गिलम गेंडुआ, अगल बगल गुलसुइयाँ लगाऊँ।

कदली खम्भ विरिछ उदबुद के, बिच-बिच मौलसिरी लगवाऊँ।

नये-नये पात मँगाइ आम के, द्वारे पै बन्दनवार बँधाऊँ।

वृज की कुंज गलियों में वनमाली छिपे हैं और किशोरी जी की होली नन्द लाला को पकड़ लाती हैंः

फाग के भीर अभीरन में गहि गोविन्दै लै गई भीतर गोरी।

भाई करी मन की 'पद्माकर' ऊपर नाई अबीर की झोरी।

छीन पिताम्बर कम्मर ते सु बिदा दई मीड़ कपालन रोरी।

नैन नचाइ, कही मुसकाइ लला फिरी अइयो खेलन होरी।

एवम

मोहन रंग मत डारो, कहो नेक मान हमारो।

घेरत हैं पनघट पर नटखट, सांझ गिने न सकारो।

ताली दे गारी गाबत है, लै लै नाम हमारो।।

भयो एसो मतबारो --- मोहन रंग मत डारो, कहो नेक मान हमारो ।

होरी में बरजोरी रे कान्हा, पट घूंघट न उघारों।

हा हा खाऊं चुनरी मत पकड़ो,

झूंठो गुलाल न डारों, खडो हमरो घरवारो।।

मोहन रंग मत डारो, कहो नेक मान हमारो।

एवम

अरी - तेरो नंदलाला करै हैरान - २

तेरो नंदलाला संग लिए ग्वाला -२,

हम हैं भोरी ब्रजवाला ll करै हैरान तेरो नंदलाला..

मैं पनघट ऊपर गई भरन को पनिया री -२,

अब कहा करों सखि ठाड़ो छैल छिकनियां,

कर बरजोरी गगर सिर फोड़ी-२

मेरी तोड़ी है मोहनमाला।। करै हैरान तेरो नंदलाला..

सुन मैया ये ग्वालनियां बहुत खिजावे री - २,

मारग में मिल जाय मोय तो पकर नचावें l

ठाड़ी ब्रजनारी बजाय रही तारी-२, कहे द्वे बापन वाला।।

करै हैरान तेरो नंदलाला..

तुम जसुदा (मैया) के ढिंग जाय कहा कर लीनो री - २,

जो मारग में मिल गई मोय तेरौ दधि छीनों l

तेरो दधी खाऊं सखन को लुटाऊँ - २, तेरो हाल करों बेहाला।।

करै हैरान तेरो नंदलाला..

सृष्टि का स्वामी गोपियों के द्वारा कितना विवश है, तरह-तरह के नाच-नाच रहा है? उसे नाचने में सुख मिलता है या स्वयं नाचने में?

बता बता घनश्याम मुरलिया कौने चुराई - २

कौने रे तेरी चुराई मुरली - २,

कहां धरी किन उठाई मुरली -२

देखो री जहां समाई मुरली - बता बता घनश्याम.....

कैसी मुरली काकी मुरली - २,

तुम कहां धरी कित ढूंडत हो,
कौने न परो सौहे न करो।
तुम खोई जहां क्यों न ढुंडत हो।।
कौने रे तेरी चुराई मुरली .....
चोरी में चतुर तुम ही हो लला,
हमको काहे दोष लगावत हो - २
हम बांस की फांस को का करिहें,
तुम ही मुख ताज लगावत हो।
कौने रे तेरी चुराई मुरली .....

होली से अच्छा अवसर और कौन सा होगा, जब ऐसा श्रृंगार किया जाय और शुभ मुहुर्त देखकर मनमोहन का वशीकरण किया जायः

साजि कैं जो चली, रँगीली खेलन होरी।।
करि सिंगार माँग मुतियन भरि, साधि चली सुधरी।
नैनन अंजन आँजि कें, मानों बाढ़ि सिरोही धरी।।
सासु बुरी घर ननद हठीली, सैयाँ ने गारी दई।
तू मदमाती फिरति ग्वालिनी, कुंजन काहे गयी।।
मैं जमुना जल भरन जाति ही, मोहन घेरि लयी।
अबकी फाग प्रिय तेरे सँग खेलौं, यह अभिलाष रही।।
तभी बेचारी मन में विसरती हैः
ऐसे कहाँ मेरे भाग, पिया संग खेलों होरी।।
काऊ सौतिन संग खेलत हुइहैं, पिया रंग भरि-भरि झोरी।
अपनी बिथा का सौं कहौं सजनी, भाग भलौ उनको री,
पिया संग खेलैं जो होरी।।
जबसे पिया परदेस गमन कियौ, सुधि हूँ न लीन्हीं मोरी।
मैं बैठी यह सगुन विचारों, कब आवै बारी मोरी,
पिया संग खेलौ मैं होरी।।

तब क्यों न इर्ष्या हो, किशोरी जी के सौभाग्य से वृजराज स्वयं किशोरी जी के दास वने घूमते हैं, मुरली में पुकारते हैं, रुठने पर मनुहार करते हैं, रास रचाते हैं, रास्ता बुहारते हैं, फूल विछाते हैं और पैरो में महावर भी लगाते हैंः

तू बड़भाग सुहाग भरी, ब्रजराज तेरे घर आवत है री।।
जो कबहूं तू मान करै, बहियाँ गहि तोहि मनावत है री।।
तोहि रिझाइ भली विधि सों, मुरली में तेरौ जस गावत है री।।
जो कबहूँ तू बन कों चलैं, पाछे सें तेरे उठि धावत है री।
तोहि लै बन में रास करै, मग झारत फूल बिछावत है री।।
सारद सेस महेस रटैं, चतुरानन ध्यान न आवत है री।
सोई अब 'सूर' भयौ बस तेरे, महावर पाँय लगावत है री।।

महाज्ञानी उद्धव के सारे तर्क कुंठित हो जाते हैंः

बहुत दिनन के रुठे श्याम, चलौ होरी में मनाय लावें रे।।
अबीर रोरी मलिकैं गुलाल म्हों मसलि कैं,
गरवा लगाइ लावें रे।।
केसरि कुसुम के माटन रँग भरि भरि,
फगुआ खिलाइ लावें रे।।
जुगुति-जतन सों, श्री नंद के नन्दन कों,
गोदी में उठाय लावें रे।।
चोवा चंदन अतर अरगजा, रंग बरसाइ लावें रे।।

बृजराज के आते ही होली का हुडदंग शुरुः

अबकी होरी मैं खेलौंगी डटिकैं,
जो श्याम आवेंगे ब्रज में पलटिकैं।।
जो श्याम मोसों बरजोरी करिहैं,
गारी मैं देउँगी घुँघटा पलटिकै।।
एक कुमकुमा ऐसौ मैं मारूँ,
जो बंसीवारे की आँखिन करकै।।
जो श्याम हमसों रूठि जायँगे, बिनती करौंगी मैं पकरि कै।।
एवम
नट नागर गोपाल कन्हैया, मुझ पर ना-ना रंग डार।
अभी जाय के गोकुल में कंस से करूंगी पुकार।।
कन्हैया मुझ पर ना-ना रंग डार कन्हैया मुझ.....
नाथ तोड़ डाले हैं सब गहने मेरे, लोग कहें क्या कंस लगे हैं तेरे।-२
मारग रोके खड़ा रहे वो, करे हमेशा रार।।
कन्हैया मुझ पर ना-ना रंग डार कन्हैया मुझ.....
ले ग्वालों को संग इधर वो आ जावें,
सब पर डालूं रंग उन्हें भी बहकावें।-2
माने ना वो बात हमारी, करता है तकरार।।
कन्हैया मुझ पर ना-ना रंग डार कन्हैया मुझ.....
सुनी बात ग्वालन की बोले यों कान्हा,
अरी रूठ यों वाले हमसे ना जाना।-2
पहनाऊंगा बड़ा मनोहर, इन बाहों का हार।।
कन्हैया मुझ पर ना-ना रंग डार कन्हैया मुझ.....
हंसी जरा सी बात सांवरा की सुनके, पिचकारी ली छीन हाथ से उनके।-2
छोड़ो ना "विश्वेश" संग यह, नाथ करूं मनुहार।।
कन्हैया मुझ पर ना-ना रंग डार कन्हैया मुझ.....
एवम
ललन मोरी सिगरी चूनर रंग डारी।
लें गागरि पनिया को निकसी -३,
घूंघट में पिचकारी। ललन मोरी....
बरज रहो बरजो नहि मानत -३,
कोटि करी मनुहारी। ललन मोरी..
राम प्रताप भयो या ब्रज में -३,
एसो ठीठ बिहारी। ललन मोरी....
एवम

मैं तो जानति नाहीं वाकौ नाम गाम,
मेरी बहियाँ पकरि लीन्ही थाम थाम।।
श्याम-बरन, बरनत न बनत मोपै,
मनहुँ कोटि छवि सिन्धु थाम।।
मंद हँसनि, दामिनी सी दसन-दुति,
पीत वसन ओढ़ें ललाम।।
कर मुरली उर में वनमाला,
सीस मुकुट अनमोल काम।
होली जैसा अवसर कहाँ मिलेगा, खुली चुनौतीः
मोहन तुम जिनि ढीठ लँगर हौ, हमहूँ तुम सन अगरीं।।
हमरौ गाँव बरसानौ कहियत, तुम्हरी गोकुल नगरी।।
तुम्हरे सँग में ग्वाल बहुत हैं, हमहूँ सखियाँ सिगरी।।
तुम्हरे सिर पर मोर मुकुट है, हमरे सिर पर चुनरी।।
एवम
सजि सजि आवत है ब्रज बाल खेलन होरी,
शशिबदनी मृग नैनी।
केसरिया सिर चीर बसन्ती, फूलन गूंथी है बैनी।।
बाँयौ हाथ नचावत आवत, बोलत कोकिल बैनी।
'रँगीले लाल' अँखियाँ अलसानी,
झुकी हैं सावन कैसी रैनी।।
और चलिये हम सब देखेंः
चलौ देखियै बरसाना, जहाँ मची रंगीली होरी।।
निकसीं भवन-भवन तें, हाथों गुलाल रोरी।
मनुहार कैसी झलकै, मानों प्रेम रंग बोरी।।
अबीर गुलाल की घुमड़नु में, पकरे है नंदलाला।
फगुआ हमारौ दीजै, हंसि माँगतीं बृज वाला।।
बाजै रबाव भेरी, ढपताल और मृदंगा।
दीनारा बीन बाजै, महुअरि मुहचंग उपंगा।।
नंदनंदन श्री गिरधारी, बृषभानु की दुलारी।
'रसखान' खैलें होरी, चिरजीव रहे यह जोरी।।
फिर तो वर्षा कैसी कि सावन भी तरसेः
पौरी वृषभानु की, आजु रंग झर बरसै री।।
उड़त गुलाल लाल भए बादर,
बीच कुमकुमा की मूँठि, घननि जैसे दामिन दमकै री।।
खेलत हैं दामिनि धन सुन्दर,
कृष्ण रसिक संग री।
'दया सखी' फागुन के दिननि में, सावन सरसै री।।
और रंग ऐसा कि धरती अम्बर सब लालः
लाल ही लाल भये, होरी खेलि रहे नन्दलाल।।
लाल लली ललकारि दुहूँ दिसि, उड़ि रहे लाल गुलाल।
वे उनके कंचुकि तकि मारत, वे तकि मारत गाल।।
लाल भयौ सिर पेच लाल कौ, पट जामा भये लाल।
दल समेत भयीं लाल लाड़लि, लालन के गल माल।।
लाल भयी छिति गगन लाल भये, ससि उड़गन भये लाल।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, रवि मंडल भयौ लाल।।
लाल लाल सब ग्वाल बाल भये, ब्रजवासी भये लाल।
लालन ललित लाल लखि लाला, पल फेरत भये लाल।।

देखिये यमुना तट पर हुडदंग मचा हैः
हो हो कहि दौरीं, अहो ब्रज बाल।
भरि भरि घट बंशीबट के तट, दै दै ओट तमाल।।
इत सुगन्ध लियें दीनबन्धु, उत भरत भामिनी भाल।
पियत पियूष चन्द लागत मानों, खुले है व्याल के जाल।।
इत उझकत पियरौ पट पहिरें, मानौं फूले कंज सनाल।
मुख देखत ऐसी लागति मानों, बुझि बरि उठत मसाल।।
'विद्याराम' दृगन देखत ही, मृगन भूलि गई चाल।
खेलि फग हिलि मिलि रस बस करि, घर आये नँदलाल।।

और देखिये लाडली जी ने मान क्यों करा है- रुठना और मनाना?

लाड़िली मान न करियै, होरी के दिनन में, कहा तुम्हारी बान।
बरस दिना कौ द्यौस लाड़िली, बैठी हौ भौंहे तान।।
मानि सिखावन लेहु आपनें, यह जिय में धरि ध्यान।
'गुनविलास' पिय दूरि उठि चलौ, रूप केलि की खान।।
क्यों न करे मान, देखिये कारणः
तुम भोरही आये होरी खेलन,
राति कौन के रंग में रँगे हौ लाल।।
पलक पीक अंजन अधरन अरू,
दियौ है महावर तिलक भाल।
'राम प्रताप' चतुर भामिनी बे,
जिन मुख कियौ है गुलाल लाल।।
किन्तु इस ढीट के आगे मान भी नहीं चला और नया खेलः
श्यामा श्याम सों होरी, खेलत आजु नई।।
नन्दनंदन कों राधे कीन्हों, माधव आपु भईं।
सखीं सखा भईं, सखा सखी भए, जसुमति भवन गई।।
गोरे स्याम साँवरी राधा, यह मूरति चितई।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढ़प, नाचत हैं थेई थेई।।
पलटौ रूप दखि माधव कौ, जसुमति चकित भई।
'सूर' स्याम कौ वदन विलोकत, उधरि गई कलई।।

आयुष्मान स्वास्थ्य बीमा योजना

- ललित चतुर्वेदी, लखनऊ

आयुष्मान स्वास्थ्य बीमा योजना भारत सरकार द्वारा लागू की गई है। इस बीमा योजना में बीमित व्यक्ति को बीमा लेने के लिए कोई राशि अथवा प्रीमियम का भुगतान नहीं करना पड़ता है। इस योजना में, जो कि विशेष रूप से पारिवारिक है हर परिवार को पाँच लाख रुपए का वार्षिक स्वास्थ्य बीमा का लाभ मिलता है। यह योजना विशेष रूप से गरीब वर्ग के लिए बनाई गई है जो कि आज के समय में अपने आपको स्वास्थ्य संबंधी खर्चों को सहन करने में असमर्थ पाता है। विगत धनतेरस से प्रधानमंत्री जी ने इस योजना में बुजुर्ग व्यक्तियों, जिनकी उम्र आधार कार्ड के अनुसार 70 अथवा उससे ऊपर हों को भी शामिल किया है। सामान्य तौर पर आयुष्मान स्वास्थ्य बीमा योजना पारिवारिक है परन्तु बुजुर्गों के लिए यह योजना व्यक्तिगत है। बुजुर्गों के लिए इस योजना में सिर्फ आधार कार्ड मांगा जाता है। मोबाइल नंबर आधार से जुड़ा होना चाहिए। आयुष्मान कार्ड दो तरह के बनाए जाते हैं।

पहलाः- आयुष्मान बीमा योजना कार्ड जिससे कि स्वास्थ्य संबंधी खर्चों में मदद मिलती है।

द्वितीयः- आभा कार्ड जो कि सबके लिए है। यह योजना सबके स्वास्थ्य संबंधी रिकार्ड रखने के लिए बनाई गई है। आयुष्मान बीमा योजना कार्ड के लिए निम्नलिखित चरणों से होकर गुजरना पड़ता है।

प्रथमः गूगल क्रोम पर जायें।

द्वितीयः beneficiary.nha.gov.in खोलें

तृतीयः यहाँ अपनी उपयुक्तता जानने के लिए एक विंडो खुलती है। जिसमें पहले एक कैप्चा आता है। फिर अपना मोबाइल नंबर जो कि आधार से जुड़ा होना चाहिए, डाला जाता है और उसको वैरीफाई करना होता है। वैरीफिकेशन का सिंबल मोबाइल नंबर के बगल में ही होता है। जैसे ही मोबाइल नंबर के वैरीफिकेशन के सिंबल पर क्लिक करेंगे आपके मोबाइल पर एक ओटीपी आएगा। इस ओटीपी को मोबाइल नंबर के नीचे एक विंडो खुलेगी जिसमे डालना होगा। अब इसके नीचे फिर एक कैप्चा आएगा। इसके बाद लाग इन का आप्शन खुलता है। इसके बाद एक विंडो खुलेगी जिसमें सबसे नीचे नीले रंग की लाईन में 70 साल से ऊपर के बुजुर्गों के लिए लिए लिखा होगा इस लिंक पर क्लिक करना होगा। इस लिंक पर क्लिक करने पर जो विंडो खुलेगी उसमें आपको अपना आधार नंबर डालना होगा। उसके नीचे एक कैप्चा आता है। कैप्चा डालने के बाद सर्च का आप्शन आता है। सर्च के आप्शन पर क्लिक करने पर अगर आपका कोई रिकार्ड नहीं है तो सबसे नीचे नये एनरोलमेंट के लिए एक आप्शन आता है जिस पर क्लिक करने पर ई-केवाईसी शुरू होता है। ई – केवाईसी में आधार नंबर के बगल में वैरीफाई का सिंबल आएगा। वैरीफाई के सिंबल पर क्लिक करने पर जो विंडो खुलेगी उसमें आपसे आपके पी एम जय आईडी और हेल्थ आईडी को आधार से जोड़ने के लिए कन्सेन्ट मांगी जाती है जिस पर क्लिक करने के बाद आपके रजिस्टर्ड मोबाइल पर दो ओटीपी आएंगे जिसमें से एक आपके आधार और दूसरा आपके मोबाइल के वैरीफिकेशन के लिए होगा। दोनों ओटीपी संबंधित स्लाट में डाल दें। इसके नीचे फिर एक कैप्चा आता है अगली विंडो में फोटोग्राफ का आप्शन आता है इसमें आपको सेल्फी मोड़ में फोटो लेना है। अगले स्टेप में आपको फिर से अपना मोबाइल नम्बर डाल कर वैरीफाई करना है। इसके बाद के कालम में आपको अपनी कैटेगरी बतानी है। अगले कालम में आपको अपना पोस्टल पिनकोड डालना होगा फिर राज्य उसके बाद शहर सिलेक्ट करने होंगे।

इसके बाद आपको अपने किसी एक पारिवारिक व्यक्ति की जानकारी देनी होगी। अगर परिवार में कोई नहीं है तो सबसे नीचे के बाक्स में टिक करके आप यहां से आगे बढ़ जायें। अगर परिवार में कोई व्यक्ति है तो आपको उसका नाम फिर उससे अपना सम्बन्ध बताना होगा फिर सम्बंधित व्यक्ति का आधार नंबर डालना होगा और उसको वैरीफाई करना होगा। इस वैरीफिकेशन के स्टेप के बाद आपकी एक फैमिली आईडी बन जायेगी। इस फैमिली आईडी के दाहिनी तरफ आपको एक डाउनलोड का सिम्बल दिखाई देगा जहां से आप अपना आयुष्मान कार्ड डाउनलोड कर पायेंगे। लेकिन थोड़ा रुकिए, आपका आयुष्मान कार्ड अब प्रोसेस हो रहा है डाउनलोड होने में करीब दो घंटे तक का समय लग सकता है। अब आप आयुष्मान की साईट से बाहर निकल आयें। करीब दो घंटे बाद फिर से आप beneficiary. nha.gov.in खोलें पहले वाले स्टेप दोहरायें। अगली विंडो में आधार नंबर डालना होगा और उसके बाद एक कैप्चा आएगा। इसके बाद आपको दो OTP आएगें, एक आधार का और दूसरा मोबाइल का होगा। आपको सम्बंधित स्लाट में OTP डालना होगा। इसके बाद आधार को स्वास्थ्य बीमा योजना के साथ जोड़ने के लिए एक कन्सेन्ट विंडो खुलेगी जिस पर टिक करने के बाद अगली विंडो में आपकी फैमिली आईडी का पेज खुल जाएगा जिसमें दाहिनी तरफ डाउनलोड का आप्शन आता है जिस पर क्लिक करके आप अब अपना आयुष्मान कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं।

मूली खाने से होने वाले फायदे

- वीरेंद्र नाथ, गाजियाबाद

मूली खाने का सबसे बडा फायदा
पेट में गैस तो बिल्कुल नहीं रहती है.
डायबिटीज से छुटकारा मिलता है.
जुखाम रोग भी नही होता है,
इसीलिए मूली को सलाद के रूप में
जरूर खाना चाहिए.
मूली पर काला नमक डालकर
खाने से भूख न लगने की समस्या
दूर हो जाती है.
मूली से हमें विटामिन ए मिलता है,
जिससे हमारे दाँतो को
मजबूती मिलती है.
मूली खाने से बाल झड़ने की समस्या
दूर हो जाती है.
बवासीर रोग में कच्ची मूली या
मूली के पत्तो की सब्जी बनाकर खाना
लाभप्रद होता है.
अगर पेशाब का बनना बंद हो जाये
तो मूली का रस पीने से
पेशाब दोबारा बनने लगता है.
हर-रोज 1 कच्ची मूली
सुबह उठते ही खाने से
पीलिया रोग में आराम मिलता है.
मधुमेह का खतरा भी कम रहता है.
खट्टी डकारें आती हैं, तो
मूली के 1 कप रस में
मिश्री मिलाकर पीने से
लाभ मिलता है.
नियमित रूप से मूली खाने से
मुँह, आँत और किडनी की
कैंसर का खतरा कम रहता है.
थकान मिटाने और नींद लाने में भी
मूली सहायक है.
मोटापा दूर करने के लिए
मूली के रस में नींबू और नमक
मिलाकर सेवन करें.

पायरिया से परेशान लोग
मूली के रस से दिन में 2-3 बार
कुल्ले करें और इसका रस पिएं.
सुबह-शाम मूली का रस पीने से
पुराने कब्ज में भी लाभ होता है.
मूली के रस में समान मात्रा में
अनार का रस मिलाकर पीने से
हीमोग्लोबिन बढ़ता है.
मूली को धीरे-धीरे चबाकर खाने से
दाँत चमकते हैं, और शरीर से
दाग-धब्बे भी दूर हटते हैं.
मूली खाने से हमारी
आँखों की रोशनी भी बढ़ती है.
ब्लड प्रैशर कंट्रोल में रहता है.
हाथ-पैरों के नाख़ूनों का रंग
सफ़ेद हो जाए तो
मूली के पत्तों का रस पीना
लाभदायक है.
मूली के नरम पत्तों पर
सेंधा नमक लगाकर खाने से
मुँह की दुर्गंध दूर होती है.
मूली के पत्तों में सोडियम होता है,
जो हमारे शरीर में
नमक की कमी को पूरा करते हैं.
पेट के कीडे नष्ट हो जाते हैं.

कहानी

अपना मुकद्दर

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी

आज, दस दिन बाद आई हो
बाई चमेली से चाची ने कहा
क्यो नही आयी थी चमेलीचाची ने पूछा
गॉव गयी थी मेरा मरद मर गया,चमेलीबोली।
चाची चुप रही
चमेली काम करने लगी और फिर जाने लगी।
चमेली किसका मरद मर गया मैं सुन नहीं पायी।
मेरा मरद मर गया चाची चमेली ने कहा
तुम्हारा मर्द से कोई संबंध नहीं था।
तुम तो ससुराल छोड़ चुकी चाची ने कहा

चाची मर्द ने मुझे छोडा ससुराल ने नही छोडा। सास ससुर सब मुझे मानते हैं और मैं खर्चा भी देती हूँ नहीतो वह भूखे मर जाते एक औलाद वह भी निकम्मी चमेली बोली

तो तुम्हारा मरद कहाँ रहता है। जिसकी वजह से तुम ने घर छोड़ाचाची पूछने लगी

पहले दूसरी औरत के साथ शहर में रहता था। दारु पीना काम नहीं करना कब तक वह सहती लात मार के निकाल दिया।

दूसरे के पास बैठ गई

चाची को चमेली की बातों में रस आने लगा।

चमेली अच्छा दो कप चाय बना लो एक तुम पीना एक हम पिएंगे.। चमेली चाय बना कर ले आई वह वैसे ही अन्दर से भरी बैठी थी।

अभी थोड़े दिन पहले गई तब मिला था चाची ने पूछा।

मोसे बात करन की हिम्मत नहीं पडत थी देखकर दूर भागत था। मेरी सासू अम्मा बीमार थी।अस्पताल में भरती थी।इसलिए गयी थी। इलाज को पैसे नहीं थे।

गोली दवा कहाँ से लाते।

एक औलाद वह भी निकम्मी, दारू खोर, और अध्याश।

सासू मॉ की रों रोकरआँखे खराब होगयी चाची

चमेली रोने लगी।

अभी भी मुझे याद आता है। सासू माँ बीच में नहीं आती तो गरासी से मुझे काट देता हत्यारा।

चाची चौंक गई!

चमेली यादों में खो गयी। बात बताती जाती और रोती जाती। चलचित्र की तरह घटनाएं घूम रही थी।

एक दिन आधी रात को आया

कहाँ मर गयी हराम खोर घीसूकी दारू से आँरवे लाल हो रही थी।गिरता पडता चमेली की ओर बढा जोर से आवाज आयी चटाक चमेली के गाल चाँटा मार दिया।

कहॉ थी? हराम खोर।

क्या यार से गलबहियाँ हो रहीथी।

मेरे संगे अबहि चल ।बाहर कालू तैयार हैफटफटिया पे।जा ओका खुश करेका हमार सब कर्जा माफ हो जइये।'

चमेली रोने लगी सोते हुए बच्चे जाग गये वोभी रोने लगे।

बाहर कालू गन्दी गन्दी गालियॉ बक रहा था।

घीसू चमेली को खीच रहा था।

आवाज सुन घीसू की माँ आगयी।

माँ को धक्का दिया वह पत्थरकी चक्की पर।गिरी खून बहने लगा। घीसू के सिर पर खून सवार था हाथ मे गड़ासा उठा लिया काट डालूँगा

झोपड़ी के बाहर पड़ोसियों की भीड़ जमा थी।

घीसू की माँ के खून बहता देखकर एक पड़ोसी चिल्लाया खून -खून यह सुनकर घीसू लड़खड़ाता हुआ भाग खड़ा हुआ।

अरे चमेली कहाँ खो गई। चमेली की आँखों से आँसू बह रहे थे। चमेली नेकहा मैं अपने बच्चों को लेकर अपनी माँ के पास आ गयी।

चाची यही है मेरी कहानी।

अच्छा चमेली पहले चाय पियो

चाची हमार जी अच्छा नाही हम न पिवे

चमेली तुम नहीं पियोगे तो मैं भी नहीं पियूंगी।

चाचीने चमेली को जबरदस्ती चाय पिलाई।

चमेली ने फिर अपनी बात कहना शुरू किया।

अच्छा चमेली तुम घर जाओ फिर बात करेंगे

चाची कलेजे में आग लगी है।

यदि आज बात नहीं कही मैं पागल हो जाऊँगी

अच्छा पहले शांत हो। चाची ने कहा।

आज 20 साल बीत गए खातहों हूँ कमात हूँ। कलेजे में

आग राखे घूमत हूँ।

पहली तारीख को रात में हमर भैया का फोन आबा।

चमेली तोहार मर्द गुजर गवा। आज 8 दिन हुइगा। शंकर और भोलू का बाल उतरवा दे।

इतने दिन के बाद खबर क्यों दी? तुम्हारे भाई ने।

अरे चाचा गाड़ी से कचर गओ कर्मकांड तो करवे पड़ी।

शंकर ने इनकार कर दियों। हमार होकर कोई संबंध नहीं हमर बाप नहीं है वह। हम नहीं जानत। कौन बाप हमार।

पर मोय जाना पड़ा। क्रिया कर्म करवे।

समाज की पॉत करी। पूरी क्रियाकर्म हमरी किये।

दोनो लरका नही गये।

हमार लिये बीस साल पहले ही मर गये।

नहीं ओकर आत्मा भटकत रहत।

कल साँझ को आयी भोपाल । वैसे ही आज चलाआबा।

तो भी चमेली बहुत दिन लग गए।

वैसे कोई साथ नाही दिया। स्यापा करवे सबही आय रहे है। हां कलथोड़ी देर हुइगे

क्यो,?चाचीने पूच्छा ,कल हमार चाचा चाची अहिये कपड़ा लेके। पूरे साल यही चलव।

जीते जी हमार मरद नहीं था मर गए तो सब रोवे आ रहे है।

चमेली शान्त हो जाओ अभी। और घर भी काम करने जाना है हाँ चाची हमार तो करम ही फूटलवा।

पिछली बार जब गॉव गवा था। तबै

शंकर से कह रहा था मैं तेरा बाप हूं आ मेरे पास बैठ कुछ बात करेंगे। शंकर ने कहा'' मैं तुम्हें नहीं जानता तुम कौन हो

मैं तो बता रहा हूं मैं तेरा बाप हूं

वह नास पीटा शंकर से बोला

शंकर ने कहा मैं केवल अपा को जानता हूं

जो ना सर्दी देखे ना गर्मी देखें सुबह 7:00 बजे से शाम 7:08 बजे तक झाड़ू पोछा बर्तन करती है। हमें पढ़ाया अपना धंधा करना सिखाया। क्या करते हो मेरे आदमी ने पूछा

शंकर ने कहा सैलून चलाता हूं

चाची उसने अपनी गर्दन नीची कर ली

चमेली बोली

मेरे मरद कीऑखों में आँसूथे'

बस मेरी एक इच्छा है तू ही संस्कार करने आना

तू माने ना माने तू मेराबेटा है

चाची ने देखा चमेली की ऑखों में आँसू थे।

तुम्हारी सास अब कहाँ है,?

ससुर तो पहले ही मर गवा। सास को अपने संग ले आवा।

आखिर बेचारी कहाँ जाए। अब बच्चे क्या कह रहे हैं।

दादी को तो मनात है पहले भी मानत थे।

मगर हमारे मरद का मुकद्दर तो देखो। आखिरी समय ओकर इच्छा पूरी ना भई।

अपन अपन मुकद्दर

नोक झोक पति से (हास्य रचना)

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी

नोक झोंक हो गई पति से हँसी हँसी में

नोक झोंक ताने में बदली
हो गया झगड़ा हँसी-हँसी में।
आया गुस्सा सोच लिया।
ताने ना सहूँगी इस जीवन में।
जब देखे तब ताने मारे।

थुल्लम थुल्ला होती जाती
वजन अपना बढ़ती जाती
ना चल पाती ना उठ पाती
हँसी का पात्र मुझे बनती।
मन को मेरे आग लग गई।
गुस्से में मैं लाल हो गई।

ऐसा जीना भी क्या जीना
सारे दिन खटती हूँ
ऑखों में इनके खटकती हूँ।
रस्सी का बनाया फंदा
और गले में डाल लिया
रस्सी फेंकी पंखे पर

रस्सी पंखे में अटकी
पंखा गिरा घडाम से
और तिपाई टूट गई
हुई आवाज दौड़कर आए
मन ही मन देख मुस्काये
अरे मेरी बुलबुल क्या कर डाला
पंखा तिपाई भी तोड़ डाला

अभी तुम्हारी बारी ना आयी।
स्वर्ग में कैसे घुसेगी बाई
हँसते-हँसते बोल पड़े।
जागो राखे साइयाँ
मार सके ना कोय
मुझे भी सुनकर हँसी आ गई

नोक झोंक खत्म हो गई
लग रही भूख खाने बैठ गई।
नोक झोंक जब तक न होय
पति पत्नी का मतलब कोय
आगे से झगड़ा मत करना
रबड़ी मलाई रोज गटकना

भाई दूज

- श्रीमती मनीषा चतुर्वेदी, भोपाल

भारतीय संस्कृति एवं हिंदू धर्म अनुसार भाई बहन के प्यार एवं निश्छल प्रेम की तीन तिथियां होतीहै। रक्षाबंधन दीपावली की दूज अथवा यम द्वितीया एवं होली की भाई दूज इन तीनों तिथियां को मूल दर्शन एवं भाव भाई बहन के प्यार को स्थायित्व देना है। हम सब इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं हमारे हिंदू धर्म के दोनों बड़े त्योहार के बाद दूज. आती है। इन दोनों दूजे का अपना अलग-अलग महत्व है लेकिन मूल भाव एक ही है भाई बहन का पवित्र संबंध।

रक्षाबंधन के दिन बहन भाई के राखी बांधने घर जाती है लेकिन दूज को भाई-बहन के घर आता है। बहन भाई के माथे पर टीका लगाकर उसके जीवन रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती। दीपावली की दूज के दिन बहन कुमकुम अथवा रोली से भाई के मस्तक पर टीका लगाती है तथा भाई बहन हाथ पकड़ कर यमुना अथवा किसी सरोवर में स्नान करते हैं ।

होली की भाई दूज ----

होली की भाई दूज को बहन सर्वप्रथम सुबह स्नान करके दीवाल के ऊपर आरवाले रखती है। यह आरवले चावल को पीसकर उसमें हल्दी डालकर उसे एपन से रखी जाती है। आरवले की संख्या भाइयों के अनुसार होती है जितने भाई होते हैं हर भाई की दो आरवले रखी जाती है। तथा दो बढ़ता की रखी जाती है। जो परिवार संयुक्त होता है वह सारे भाइयों की रखी जाती। सबसे पहले ऊपर एक घर बनाया जाता है इसमें भाई और बहन दोनों बनाये जातेहै। भाई और बहन हाथ मिलाकर बनाए जाते हैं। घर को चारों तरफ से बिल बनाकर सजा देते हैं। उसके नीचे आरवले रखी जाती है। बनाने के पश्चात उन्हें दही और पुआ से भोग लगाते हैं। भाई जब घर पर आता है तब उसे और बालों के पास ही बिठाकर भोजन कराया जाता है भोजन करने के पश्चात मस्तक पर गुलाल का टीका करती है। गुलाल होली का प्रतीक होता है इसलिए गुलाल से ही लगातेहैं। इसके प्रांत भाई बहन को उपहार या रुपए प्रदान करता है तथा बहन भाई की सुरक्षा एवं लंबी आयु की प्रार्थना करती है।

समय में बड़ी तेजी से परिवर्तन आया । अधिकतर बहिने अब आखले नहीं रखती। समय का अभाव एवं कमरे के दीवाल की खूबसूरती में कमी आने का भय इसका प्रमुख कारण है। शादी हो जाने के बाद भी बहन अपनी ससुराल में आवश्यक रूप से रखती थी। वर्तमान समय की हमारी बच्चियों को आरवले क्या है यही ज्ञात नहीं। इसके बाद की यह प्रथा जिसके घर में बुजुर्ग महिलाएं हैं वहां अभी भी चली आ रही है।

एपन से बनाने के पीछे भी कारण है जिसे हमेशा याद रखा जाता है।

पूजा करने के बाद कहानी कही जाती है। वैसे तो प्र प्रचलन में बहुत सी कहानी है लेकिन प्रमुख कहानी

एक गांव में एक गरीब ब्राह्मण परिवार रहता था । ब्राह्मण देवता भिक्षा से अपनी गृहस्थी चलाते थे। उनके एक बहुत सुंदर कन्या थी। धीरे-धीरे कन्या विवाह योग्य हुई लेकिन बर ढूंढने में उन्हें बहुत कठिनाई हो रही थी.। कारण पर्याप्त दहेज का प्रबंधन उनके पास नहीं था। किसी तरह पास के एक गांव में उन्होंने शादी तय कर दी। लेकिन शादी के बाद दहेज काम ले जाने के कारण ससुराल वाले उसे लगातार प्रताड़ित करते थे। नाराजी दिखाने के लिए उन्होंने बहू का मायके जाना भी बंद कर दिया। नाक लड़की अपने मायके नहीं जाती थी ।और ना कोई घर वाला उससे मिलने आ सकता था। होली के उपरांत भाई दूज आयी .। ससुराल वालों ने सख्त निर्देश दे दिया तुम घर नहीं जाओगी और ना तुम्हारा भाई

यहां आ सकता। भाई बहन ने बहुत प्यार था। बहन जैसे ही दूज का त्योहार आया सुबह से ही उदास हो गई। लेकिन घर वालों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

उधर उसका भाई भी जिद पड़ गया कि मैं बहन से टिका

लगवा कर रहूंगा। मां बाप ने मना किया वहां जाकर झगड़ा नहीं करना जैसे रह रही है वैसे ही रहने दो। उसने कहा मैं टीका लगवा कर दिखा दूंगा।

बहन सुबह से सिलबट्टे पर चावल और हल्दी पीस रही थी क्योंकि ननद को आरवले रखना था। भाई बहन के गाँव गया। गांव वालों को भी आश्चर्य हुआ। गांव वालों के सामने भी उसने अपनी वही बात हो रही मैं टीका लगवा कर दिखा दूंगा। उसने ईश्वर को याद किया और कहा यदि मेरा भाई बहन का प्यार सच्चा है तो है ईश्वर मुझे थोड़ी देर के लिए कुत्ता बना दो। और वह कुत्ता बन गया। कुत्ता बनकर वह अंदर आंगन में पहुंच गया। बहन वैसे ही दुखी होकर चावल पीस रही थी।। कुत्ते ने सिलबट्टे पर अपना ज्ह मारा बहन ने गुस्से के मारे अपन में सना हुआ अपना हाथ उसके मुंह पर तेजी से मार दिया। इसके बाद कुत्ता भाग गया।

ईश्वर से प्रार्थना करो फिर से मनुष्य बन गया और सभी ने देखा कि उसके मस्तक पर एप्पल का टीका लगा हुआ है।

और चेहरे पर स्पष्ट रूप से बहन का हाथ छपा हुआ है। पूरे गांव में खबर बिजली की तरह फैल गई।

तथा उसके परिवार वालों को भी मालूम पड़ा। और वह भी आश्चर्यचकित हो गए।

उन्होंने ऐसा सम्मान उसके भाई को फिर अपने घर में बुलाया तथा बहन ने विधिवत अपने भाई के टिक किया। घर वालों ने उसके भाई तथा बहू के परिवार वालों से क्षमा मांगी तथा कहा हमसे बहुत बड़ी भूल हुई भाई तथा बहन के बीच में दूरी बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। ससुराल तथा मायके में मित्रता हो गई।

. जैसे इन दोनों भाई बहनों को प्यार को अमर कर दिया हे ईश्वर हमारे भाई बहन के प्यार को भी बनाए रखना। बहन यह कहकर चावल और आरबलो पर छोड़ती है.।

भाई बहन के अमर प्रेम को दर्शाने के लिए यह तो हर मनाया जाता है लेकिन वर्तमान समय में यह इस त्यौहार के ऊपर फिल्म का प्रभाव पड़ा है।

इस त्यौहार का उल्लेख तथा प्रकाशन करने का मेरा यही हैतू है हमारे घर की बहू बेटियां अपने परंपरागत री तियों का अनुसरण करें। क्योंकि हर त्यौहार के पीछे एक सुखद संदेश छुपा रहता है। यदि भाई बाहर है तो भी हम घर मेंआरवले बनाकर पूजा करें तथा अपने भाई के लंबी आयु की कामना करें। भाइयों को भी अपनी बहन का सम्मान करना चाहिए तथा समय-समय पर उन्हें घर बुलाकर आ आद र एवं सम्मान करें ताकि हमारी भारतीय संस्कृति एवं हिंदू धर्म सुरक्षित रख सकें। तथा हमारे समाज की विशेषता सभी के ज्ञान में आए।

मां का रूप महान

- करुणा मिश्रा, मथुरा

मां का रूप महान है
चैत्र मास में मैया के दिन,
आते बारंबार है ।।
कलश ध्वजा और दियों से,
मंदिर सजता हर बार है ।।
लाल ही लहंगा लाल ही चुनर,
हर तरफ लाल की ही बहार है ।।
जगमग, जगमग, जगमग करता,
गले में हीरो का हार है ।।
मेहंदी, काजल, बिंदिया, महावर,
मैया के श्रृंगार है ।।
चूड़ी, नथनी, पायल पहने,
मां का रूप महान है ।।
मां तो जग जननी है,
करती सबका कल्याण है ।।
माता का यह रूप मनोहर,
मां को लाख प्रणाम है ।।
भक्तों की टोली आ आकर,
मां के गुणों को गाती है ।।
कन्या लांगुर की टोली भी,
हलवा पूरी खाती है।।
माता तो है प्रेम की मूर्ति,
उसकी महिमा महान है ।।
माता तो है जग की जननी,
मां को कोटि-कोटि प्रणाम है ।।

ब्रज का होलिकोत्सव

- सुनंदा चतुर्वेदी, कोलकाता

कहते हैं.... जिसने ब्रज का होलिकात्सव नहीं देखा, उसे राधा कृष्ण का आशीर्वाद नहीं मिलता,

बसंत पंचमी से ही ब्रज में चालीस दिवसीय रंगारंग होली का त्योहार विभिन्न स्थानों में भिन्न भिन्न प्रकार से हर्षोल्लास से मनाया जाता है, जिसका उल्लेख आगे किया गया है, जिसमें बरसाने की लट्ठ मार होली सबसे प्राचीन एवं प्रसिद्ध मानी जाती है।कई वर्षों की मुराद पूरी हुई,जब हम विगत वर्ष परिवार के साथ होली का त्योहार मनाने ब्रज (मथुरा) पहुंचे, जहां पांच दिन के बाद भी वापस लौटने का मन नहीं था,सच ही कहा जाता है कि ब्रज का होलिका उत्सव नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा,आठ दिनों तो कुछ ज्यादा ही विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न भिन्न ढंग से बसंती बयार के साथ लाल भये बादल,,,,, रंगों की बरसात का आंनद कल्पनातीत है। ब्रज के होलिकात्सव में बरसाने की लट्ठ मार होली एक पारंपरिक और प्रसिद्ध होली उत्सव है, जो पूरे भारत में प्रसिद्ध है और लोग इसे देखने के लिए दूर-दूर से आते हैं। लट्ठ मार होली का उत्सव बरसाना के राधा रानी मंदिर में मनाया जाता है, जो भगवान कृष्ण की प्रेमिका राधा को समर्पित है। उत्सव की शुरुआत में, महिलाएं राधा रानी मंदिर से निकलती हैं और पुरुषों पर लाठियों से हमला करना शुरू करती हैं। पुरुष उन्हें गुलाल और पानी से बचाने की कोशिश करते हैं, लेकिन महिलाएं उन पर लाठियों से हमला करती रहती हैं। उत्सव के दौरान, लोग गुलाल, पानी और रंगों से एक दूसरे पर हमला करते हैं। यह उत्सव बहुत ही रंगीन और मजेदार होता है, और लोग इसे बहुत ही उत्साह के साथ मनाते हैं। बरसाने की होली देखने देश विदेश से हजारों पर्यटक आते हैं। स्थानीय दर्शक होलियारों का जोश एवं हौसले बढ़ाने के लिए होलियां भी गाते हैं.....

1

*मानो या न मानों मेरी सुनो या न सुनो।
मैं तो तोही कौ न छाड़ौगी,अरे सांवरे।।
जामे लाज शर्म की कहा बात रे,
जब प्रेम के पंथ दियौ पांव रे।।

2

जा काहू को मिलहि श्याम,कहि दीजौ हमारी राम राम। गलिन गलिन अरु द्वार द्वार पै,होरी की है रही धूम धाम।।खान पान राधा तजि दीन्हो, ध्यान तुम्हारौ आठों धाम।।

3

चहुं दिसि धूम मची है,हो हो होरी सुनाया। जित देखौ तित एक यही धुनि,जगत रहयों बौराय।।

उड़त गुलाल चलत पिचकारी,बाजत ढफ फहराय। कान्हा माते नर नारी,गावत लाज गंवाए।।

बरसाना के साथ ही ब्रज के विभिन्न क्षेत्रों में होलिका उत्सव मनाने का अपना अपना निराला ढंग है , लेकिन रंग की बौछार हो या गुलाल की मस्ती में होली गायन का अंदाज एक सा ही है, संक्षिप्त विवरण के साथ अन्य स्थानों की चर्चा आवश्यक है.....

मथुरा

मथुरा में होलिका उत्सव को बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। यहाँ के विश्राम घाट पर होलिका दहन का आयोजन किया जाता है, जिसमें लोग बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। यहां भी होली खेलने के साथ गायन-वादन की रौनक रहती है

1

कहां जाय रे रसिया नैना लगाय।
तेरे काजै वन बन भटकी,चील भई मंडराऊँ।।
तेरे काजै भागें भटकी,बागें तमासे आउँ।
तेरे काजैं जोगिन है गई,अंगि भभूत रमाउँ।।
2
कहूं जोगीरा है गये,मोरे बालमा।
जोगीरा की हेरा फेरी,मोहि नीकी लागै रे।।
नित उठि आवै जोगी,मोरै अंगना।।.....मोरे बालमा।

वृंदावन

वृंदावन में होलिका उत्सव को भगवान कृष्ण के प्रेम और स्नेह के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। यहाँ के बांके बिहारी मंदिर में होलिका दहन का आयोजन किया जाता है, जिसमें लोग बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

1
मतवारों ने घेरि लई, पिला कै प्यालियां।
कच्ची कली मति टौरौ, झुके उसकी डालियां।
उसके सीने पै डारौगै हाथ, देयगी वो गालियां।।.....
देयगी वो गालियां।।
2
सुमंगल दाहिने, होरी खेलत राम नरेश।
कौन के हाथ कनक पिचकारी,को रंग भरि भरि देत।
राम जी के हाथ कनक पिचकारी, लक्षिमन भरि भरि देत।।

गोकुल

गोकुल में होलिका उत्सव को भगवान कृष्ण के बचपन की याद में मनाया जाता है। यहाँ के गोकुल नाथ जी मंदिर में होलिका दहन का आयोजन किया जाता है, जिसमें लोग बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

होली
अबीर मलौगी कपोल तिहारे, जसुदा लाल ब्रजराज दुलारे।यह रितु फागुन छाय रही है,छैल छबीले हौ प्रान प्यारे।। रैन जगाय लेहु रंग रसिया,जो पिय आये हौ द्वार हमारे।।ख्यालखुसाल भरे मन मोहन, जीवन उमंगि उमंगि उमंगा रे ।।

नंदगांव

नंदगांव में होलिका उत्सव को भगवान कृष्ण के पिता नंद बाबा की याद में मनाया जाता है। यहाँ के नंद बाबा मंदिर में होलिका दहन का आयोजन किया जाता है, जिसमें लोग बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

होली
फाग खेलन को मेरो जिया चाहै, मैं बृज की कुंजन को जाऊंगी।रंग में रंगोगी उनको पीताम्बर सुरंग चुनरिया रंगाउगी।।जो तुम भये हो खिलाड़ी होरी के, मैं गलवा तोहि लगाउंगी। उमंगि मिलोगी आनंद घन सों, ख्याल खुसाल मनाऊंगी।।

गोवर्धन

गोवर्धन में होलिका उत्सव को भगवान कृष्ण की गोवर्धन पूजा की याद में मनाया जाता है। यहाँ के गोवर्धन पर्वत पर होलिका दहन का आयोजन किया जाता है, जिसमें लोग बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

होली
मेरो मन नंदलाल सों अटकौ।
बौरानी सी फिरति कुंजनि में,सुधि नाहिं घूंघट पट कौ।
मन हरि लियौ नंद कौ ढोटा,मोर मुकुट को लटकौ।।मेरो मन नंदलाल...
2
भीजै म्हारी चूनरी हों नंदलाल। मति मारौ केसरि पिचकारी,हां हां मदन गोपाल।। बसन उड़त सो सब तन निरखत, कौन निडर यह ख्याल।'मदन कुमार' छैल छबीलौ,ढीठ भयों हैं गोपाल।। भीजै म्हारी चुनरी हों नंदलाल.....

इन सभी क्षेत्रों में होलिका उत्सव को बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जाता है, और लोग बड़ी संख्या में इसमें भाग लेते हैं। यह उत्सव प्यार, स्नेह और खुशी का प्रतीक है, और लोग इसे बहुत ही उत्साह के साथ मनाते हैं। लौटना तो था ही

*पर मनवा अबहु लागों राधे कृष्णा में ही।

राशिफल वर्ष 2025 (संवत्सर 2082)

सभी राशि के जातकों के लिए खुशियों से भरा रहने वाला है। नए साल में कुछ राशि के जातकों को मनचाहा करियर मिलेगा। वहीं, कुछ राशि 2025 के जातक बिजनेस की शुरुआत कर सकते हैं। ऐसे में चलिए जानते हैं स्वास्थ्य, करियर और लव लाइफ समेत विभिन्न क्षेत्रों की दृष्टि से कैसा रहने वाला है नया साल।

मेष राशि – वार्षिक राशिफल 2025। मेष राशि के जातको के लिए मिलाजुला रहने वाला है। यह साल खुशियों से भरा रहने वाला है। आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। नए साल के शुरुआती समय में व्यापार – व्यवसाय में उतार–चढ़ाव देखने को मिलेगा। साथ ही अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। प्रिय लोगों से रिश्ते मधुर होंगे। वर्ष के बीच के समय में कोई खुशखबरी मिल सकती है।

स्वास्थ्य – वर्ष 2025 में स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या का सामना करना पड़ सकता है। परिवार में किसी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जिस कारण आर्थिक तौर से मानसिक तौर से आप काफी परेशान रहेंगे। स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखें। रोजाना व्यायाम करें। वित्त की दृष्टि से नया साल उतार–चढ़ाव वाला रहेगा। कार्यक्षेत्र में नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। सहयोगी लोग आपके काम को बिगाड़ सकते हैं। किसी नए काम की शुरुआत कर सकते हैं। काम के सेक्टर में किसी से कोई बात शेयर न करें। अधिकारी वर्ग के लोग विरोध में आ सकते हैं। वर्ष 2025 आपके करियर की दृष्टि से अधिक अच्छा नहीं रहने वाला है। इस वर्ष करियर को लेकर अधिक मेहनत करनी की आवश्तकता है। साल के आखिरी समय तक आपको कोई बड़ी खुशखबरी मिल सकती है। करियर को लेकर इस वर्ष आप काफी परेशान रह सकते हैं। ऐसे में आपको सही मार्गदर्शन की जरूरत है। यह साल लव लाइफ वालों के लिए ठीक–ठाक रहने वाला है। लव पार्टनर से कोई वाद–विवाद हो सकता है। किसी बात को लेकर पार्टनर से मतभेद बढ़ सकते हैं। साल का आखिरी समय पार्टनर के साथ बहुत ही अच्छा रहने वाला है।

वृषभ – वर्ष 2025 खुशियों से भरा रहने वाला है। इस साल कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। सहयोगी वर्गों से मदद मिलेगी। साल के बीच के समय में आर्थिक स्थिति में गिरावट महसूस होगी। काम के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। शनि देव की कृपा से मान सम्मान की वृद्धि होगी। आपके काम की तारीफ होगी। यह साल सफलता से भरा रहने वाला है। स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। मौसम के हिसाब से स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या का सामना करना पड़ सकता है। खानपान पर नियंत्रण रखें। परिवार में किसी बड़े व्यक्ति का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है। वर्ष 2025 आर्थिक दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। कोई पर्सनल काम की शुरुआत कर सकते हैं। कार्यक्षेत्र में लोगों से मदद मिलेगी। किसी बड़ी डील का हिस्सा बन सकते हैं। रुका हुआ काम फिर से शुरु हो सकता है। वर्ष के बीच के समय में आर्थिक समस्या आ सकती है। वर्ष 2025 करियर की दृष्टि से आपके लिए खास रहने वाला है। विद्यार्थियों को इस साल सफलता प्राप्त होगी। मनचाहा करियर मिलेगा। नए काम की शुरुआत करने से सफलता मिलेगी। वर्ष 2025 में लव लाइफ में उतार – चढ़ाव देखने को मिल सकता है। पार्टनर से मतभेद हो सकते हैं। पार्टनर को महत्व दें। उनकी किसी बात को इग्नोर न करें। वर्ष का बीच और आखिरी समय पार्टनर के साथ अच्छा नहीं रहने वाला है।

मिथुन राशि : साल 2025 मिथुन राशि के लिए उतार–चढ़ाव से भरा रहेगा। इस साल आपको कई उपलब्धियां हासिल होंगी। साल कठिनाई से भरा रहेगा। मानसिक तनाव की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। परिवार से मतभेद बड़ी समस्या का कारण बन सकते हैं। काम में सफलता प्राप्त होगी। कार्यक्षेत्र में परेशानियां उत्पन्न होंगी। वर्ष के बीच और आखिरी समय में आर्थिक लाभ होगा। बिगड़े हुए कार्य पूरे होंगे। शनि और हनुमान की जी की उपासना करना इस वर्ष आपके लिए लाभकारी रहेगा।

वर्ष 2025 स्वास्थ्य की दृष्टि से आपके लिए अच्छा नहीं रहने वाला है। मानसिक तनाव की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी देखने को मिलेगी । इस साल परिवार में पत्नी या बच्चों का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अपने और परिवार के लोगों के स्वास्थ्य का ख्याल रखें। वर्ष 2025 आर्थिक तौर से उतार–चढ़ाव से भरा रहेगा। कार्यक्षेत्र में परेशानी उत्पन्न होगी। नौकरी वर्ग वालों के लिए इस साल कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। अधिकारी वर्ग से संबंध बिगड़ सकते हैं। व्यवसाय आदि के लिए बड़ा कर्ज या लोन लेना पड़

सकता है। वर्ष 2025 करियर की दृष्टि से आपको अधिक मेहनत करनी की जरूरत है। इस साल करियर में सफलता मिलना मुश्किल है। हालांकि आप निराश न हो। साल के आखिरी समय तक सफलता मिल सकती है।वर्ष 2025 लव लाइफ वालों के लिए उतार-चढ़ाव की स्थिति वाला रहेगा। पार्टनर से मतभेद बढ़ सकते हैं। पार्टनर के साथ घूमने का प्लान बन सकता है। साल का अंतिम समय लव लाइफ के लिए अच्छा रहने वाला है।

कर्क राशि : वर्ष 2025 कर्क राशि के लिए शानदार रहने वाला है। साल का बीच का समय कुछ समस्याओं से भरा रहेगा। शनि का गोचर आपको गलत कार्यों की ओर प्रेरित कर सकता है। धार्मिक यात्राओं का प्लान बनेगा। जीवन में कई बड़े परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं। घर में कोई नया मेहमान आएगा। वर्ष 2025 स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। पत्नी के स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। खानपान पर अधिक नियंत्रण रखें। व्यायाम की मदद लें। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। वर्ष 2025 आर्थिक तौर से आपके लिए शानदार रहने वाला है। कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। भूमि संबंधी कार्यों से लाभ मिलेगा। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक तंगी से छुटकारा मिलेगा। करियर की दृष्टि से नया साल अच्छा रहने वाला है। परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। इस साल आपको नए रास्ते प्राप्त होंगे। करियर की दृष्टि से नया साल आपके लिए महत्वपूर्ण रहने वाला है। वर्ष 2025 लव लाइफ वालों के लिए शानदार रहने वाली है। पार्टनर से चल रहे पुराने विवाद खत्म होंगे। नए जीवन की नई शुरुआत कर सकते हैं। यह साल पार्टनर के साथ अच्छा रहेगा।

सिंह राशि : वर्ष 2025 राशि के लिए ज्यादा अच्छा नहीं रहने वाला है। किसी विवाद में फंस सकते हैं। आर्थिक तौर से आपको परेशानी उत्पन्न होगी। व्यवहार में सफलता प्राप्त मिलेगी। कार्य क्षेत्र में बड़ा नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। वर्ष 2025 स्वास्थ्य की दृष्टि से आपके लिए अच्छा नहीं कहा जा सकता। आर्थिक रूप से परेशान हो सकते हैं। मानसिक स्थिति भी ठीक नहीं रहेगी। स्वास्थ्य संबंधी समस्या का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में गिरावट महसूस होगी। वर्ष 2025 आर्थिक दृस्टि से कठिनाई से भरा रहने वाला है। व्यापार में गिरावट महसूस होगी। कार्यक्षेत्र में कोई परेशान कर सकता है। कार्यक्षेत्र में किसी बड़े षड्यंत्र का शिकार हो सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधी समस्या का सामना करना पड़ सकता है। कार्यक्षेत्र में जल्दी-जल्दी परिवर्तन करना अच्छा नहीं होगा। वर्ष 2025 करियर की दृष्टि से उतार-चढ़ाव से भरा रहने वाला है। इस साल मनचाही सफलता प्राप्त करने में देरी का सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के आखिरी समय में खास व्यक्ति के सहयोग से आप कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में सफल होंगे। करियर के लिए अधिक मेहनत करनी की आवश्यकता है। वर्ष 2025 में लव लाइफ में कई तरह की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। पार्टनर के साथ दूरियां बढ़ सकती है। रिश्तों को बचाने के लिए कुछ बातों को अनदेखा करें।

क्रमशः .....

समाज समाचार

■ श्रीमती श्रेया चतुर्वेदी पत्नी श्री कार्तिक पौत्रवधू स्व. श्रीमती सुधा - स्व. श्री भूपेंद्रनाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/इंदौर) पुत्रवधू श्रीमती ज्योति - श्री निशीथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/USA), पुत्री श्रीमती कंचन-श्री संजय चतुर्वेदी (मथुरा/अहमदाबाद) को भारत सरकार द्वारा उनके आविष्कार "System and Method for Augmenting Channel Characteristics of Audio Recordings" के लिए पेटेंट प्रदान किया गया। यह पेटेंट यूएसए में भी शेष है। श्रेया ने इलेक्ट्रॉनिक & प्रसारण प्रोधोगिकी में एम.टेक. किया है और AI क्षेत्र में कार्यरत हैं।

■ कु. चारु चतुर्वेदी पौत्री स्व. श्रीमती सुधा - स्व. श्री भूपेंद्रनाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/इंदौर), पुत्री श्रीमती ज्योति - श्री निशीथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/USA) ने Georgia Institute of Technology, USA से B.S. Mechanical Engineering पूर्ण की। चारु का चयन Georgia Institute of Technology में M.S. Mechanical and Aerospace Engineering के लिए हो गया है।MS में वे Opto-Mechanical क्षेत्र एवम् रक्षा विभाग के लिए अनुसंधान भी कर रही हैं।

श्री भुवनेश चतुर्वेदी

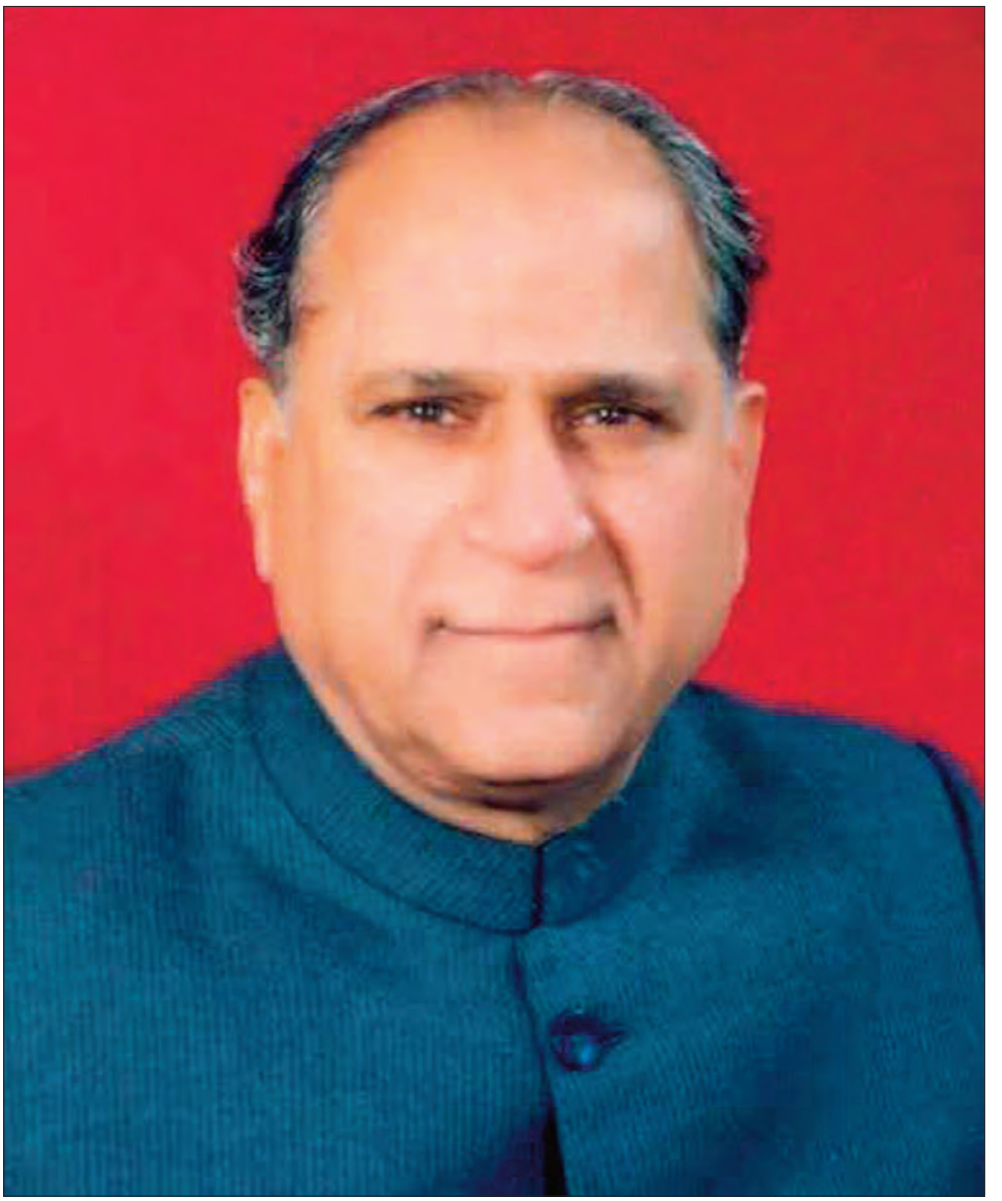

2 मार्च 2014 को श्री भुवनेश चतुर्वेदी का महाप्रयाण दिवस है। हम उनके परिवार जन, मित्र व सहयोगी उनका श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए उनके व्यक्तित्व व उपलबध्यिों का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

ईमानदार, स्वच्छ राजनेता, समाजसेवी व शिक्षा के क्षेत्र में अनूठा कार्य करने वाले पूर्व सांसद, विधायक एवं पूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री (च्ण्डण्व्) श्री भुवनेश चतुर्वेदी (कोटा, राजस्थान) का जन्म मैनपुरी (उ.प्र.) में 2 मई, 1928 को हुआ था। उनके पिता श्री राजाराम जी चतुर्वेदी ''जो कि कोटा रियासत के प्रधानमंत्री श्री विषम्भर नाथ जी के मामा श्री श्याम मनोहर जी के पुत्र थे'' पूर्व कोटा रियासत में असिस्टेन्ट रेवेन्यू कमिश्नर थे व अपनी ईमानदारी और कार्य कुशलता से राजघराने के काफी नजदीक थे। उनकी माता का नाम श्रीमती पार्वती देवी (तरसोखर, भदावर) था। छात्र जीवन में भुवनेश जी ने 9 अगस्त

1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था।

हर्बट कॉलेज कोटा से उन्होंने (1950 दशक) एम.ए., एल.एल.बी. पास किया। भुवनेश जी कॉलेज के अध्यक्ष रहे जहां उन्होंने लक्ष्मी. एन. मेनन, वायलेट अल्वा, के. डी. मालवीय, सरदार के. एम. पानिकर, विद्यानाथ सेठ जैसे अनेक प्रतिष्ठित लोगों को आमंत्रित किया।

इसी दौरान वे छंजपवदंस न्दपवद व ैजिनकमदजे के राजस्थान के प्रतिनिधि बने और फिर छंजपवदंस न्दपवद व ैजिनकमदजे के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष बने।

पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा भुवनेश जी का यूथ कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में मॉस्को यूथ फेस्टीवल में प्रतिनिधित्व करने के लिए चयन किया गया, जोकि उनके जीवन में टर्निंग पॉइन्ट था। उन्होंने लन्दन में (1955) में इन्टरनेशनल स्टूडेन्ट्स यूनियन में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जहां उनकी मुलाकात श्री वी.के.कृष्णा मेनन से हुई। उन दोनों का घनिष्ठ सम्बन्ध जीवनपर्यन्त रहा।

बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद बैंक ऑफ बड़ौदा के डायरेक्टर बने । वर्ष 1972 में कोटा विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस विधायक बने। उसके उपरान्त वर्ष 1982 से वर्ष 2000 तक तीन अलग-अलग प्रधानमंत्रियों के विश्वासी सहयोगी के रूप में राज्य सभा सदस्य व केंद्रीय मंत्री भी रहे।

1990 के दशक में पहली बार श्री नरसिंम्हाराव साहब ने अपने प्रधानमंत्री कार्यालय में उन्हें राज्यमंत्री बनाया। उनके मंत्री काल में उनके प्रयासों से देहली-कोटा रेलवे लाइन का दोहरीकरण हुआ, तथा अणुभट्टी का विस्तार हुआ। एक बार तो वे काश्मीर में आतंकवादियों से बात करने वे अकेले श्री राव साहब के निर्देश पर डोडा एरिया में गये, उन्होंने साथ में कोई गार्ड भी नहीं लिया था। इस घटना का जिक्र नीरजा चैधरी पत्रकार द्वारा एक लेख में किया है। नीरजा चैधरी ने अपनी पुस्तक में भ्वू च्तपउम डपदपेजमते क्मबपकम में उनका कई बार जिक्र किया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ में उन्होंने कई बार भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में भाग लिया और संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण दिया। माननीय अटल विहारी बाजपेयी के साथ भी वे यू.एन. गये।

समाज सेवा में उन्होंने 1950 से पहले उ.प्र. में ऊपरी क्षेत्र में खदराला गांव में श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ श्रमदान कर सड़क बनाने का योगदान किया था। फिर कोटा में (17 वर्ष की आयु में) फ्रैण्ड्स यूनियन का गठन किया जिसने कई सामाजिक कार्य किये और खासतौर पर राजा के घुड़दौड़ के ग्राउण्ड को कांटों, गोखुरुओं से साफ किया और कोटा की जनता को हॉकी खेलने का पहला सार्वजनिक ग्राउण्ड दिया। भुवनेश जी में मॉस्को यूथ फेस्टीवल (1955) की विजिट के बाद बड़ा बदलाव आया। उन्होंन वहां की शिक्षा प्रणाली से प्रभावित होकर कोटा में 1957 में एक मिडिल स्कूल बनवाया जिसका उद्घाटन करने तत्कालीन रक्षा मंत्री श्री वी. के. कृष्ण मेनन आये थे जिनके भुवनेश जी अभिन्न कृपापात्र थे।

तत्पश्चात 50 वर्ष पूर्व उन्होंने भव्य आवासीय हायर सैकेण्डरी स्कूल का निर्माण करवाया।

देश व विदेश की नामी-गिरामी हस्तियों ने भुवनेश जी द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थान में अलग-अलग अवसरों पर शिरकत की। उनमें पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा जी, श्री नरसिम्हा राव, श्री इंद्रकुमार गुजराल, डॉ. मनमोहन सिंह, श्री चंद्रशेखर जी, पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी, डॉक्टर अब्दुल कलाम, डॉ. शंकर दयाल शर्मा, श्रीमती प्रतिभा सिंह जी व उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत जी का नाम उल्लेखनीय है।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ उनकी विशेष घनिष्ठता थी। पोकरण विस्फोट के समय अटल जी ने उनसे साथ चलने का आग्रह किया, तथा ये बात गोपनीय रखी गई।

श्री नरसिम्हा राव साहब (पूर्व प्रधानमंत्री) उन पर पूर्ण भरोसा रखते थे और अधिकतर महत्वपूर्ण निर्णयों में उनकी सलाह मानते थे।

पूर्व राष्ट्रपति जी महामहिम प्रणव मुखर्जी साहब, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी, श्री के. डी. मालवीय एवं श्री वी. के. कृष्णमेनन, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भैरासिंह शेखावत के साथ भी उनके घनिष्ठ सम्बन्ध थे।

उक्त विवरण के अतिरिक्त भी भुवनेश जी में बहुत गुण थे जो बहुत कम लोगों में पाए जाते हैं। वे संयुक्त परिवार के हामी थे। जब प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव ने उन्हें मंत्रिमंडल के लिए आमत्रिंत किया तो भुवनेष जी ने कहा कि मेरी चाची श्रीमति चंदा देवी का देहावसन हो गया है। अतः मैं 13वें के बाद ही आ पाऊंगा। (ऐसा लगाव था उनका परिवार से) श्री नरसिम्हा राव ने मंत्रिमंडल में इनका शपथ ग्रहण कार्यक्रम 15 दिन बाद का रखा।

मिथलेश चन्द्र चतुर्वेदी
निदेशक, जनशक्ति एवं गजेटियर्स (रिटायर्ड)
राजस्थान सरकार
9, विनायक एन्कलेव, पत्रकार कॉलोनी रोड़,
गोल्यावास मानसरोवर, जयपुर- 302020
(र.क्र.3095)

एक जिंदगी, अनेक कहानियां

- प्रखर मिश्र, मुंबई

इस साल मेरी मां को गुजरे 4 साल हो चुके हैं। हिंदू परंपरा में, यह हवन और पूजा के साथ किसी के परिवार के मृतक प्रियजनों को याद एवं सम्मान करने का एक महत्वपूर्ण वर्ष है। अनुष्ठान आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण हैं ही पर वे आत्मा की शारीरिक अभिव्यक्ति में एक और भूमिका निभाते हैं। ऐसे अवसर हमें सच्चाई और ईमानदारी से उनके जीवन का स्मरण करने और उन्हें याद करने का मौका देते हैं। इस प्रकार, मुझे अपनी माँ के अस्तित्व और दुनिया पर उनके प्रभाव के बारे में अधिक गहराई से सोचने का अवसर मिला।

जबकि कोई भी अपने माता-पिता को कभी नहीं भूलता है – विशेष रूप से माताओं को – लेकिन हम उन्हें केवल उदाहरणों और घटनाओं के माध्यम से याद करते हैं। इन यादों के माध्यम से, हम लगातार अपने प्रियजनों के जीवन को वापस याद करने की कोशिश करते हैं। मेरी मां मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा थीं। वह मेरी भलाई के लिए पूरे दिल से प्रतिबद्ध थी, जिससे मुझे खुद को क्षमता और उत्कृष्टता में विकसित करने के लिए समय और ऊर्जा समर्पित करने की अनुमति मिली। मैं आज जो हूं, उसका सबसे बड़ा कारण वह है। बहुत सारे उदाहरण हैं जो मैं अपनी मां के बारे में याद करने की कोशिश करता हूं। उनमें से कुछ मुझे स्पष्ट रूप से याद हैं- उनका पसंदीदा भोजन, रंग, गतिविधि, उनके तौर-तरीके और निश्चित रूप से उनका गर्मजोशी भरा स्पर्श। लेकिन स्मृति कुछ अन्य उदाहरण पर विफल रहती है - वह छुट्टियों और यात्राओं पर कैसे थी? उन्हें अपनी चाय में कितने चम्मच चीनी पसंद थी? उन्होंने किन दिनों में उपवास किया?

चौबारसी उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना के साथ साथ हमें इन यादों के खोए हुए खजाने को खोजने का मौका भी देती है। कैसे उनके भाई-बहनों ने, भतीजे-भतीजियों ने और यहां तक कि उनके पड़ोसियों को याद किया — यह सब एक खोज है! वास्तव में, यहां तक कि जो लोग उनसे नहीं मिले थे और सिर्फ उनके बारे में सुना था, वे उसे मरणोपरांत जानने के लिए काफी उत्सुक थे। इस तरह की सामूहिक याद पुनर्निर्माण में मदद करती है और कई मायनों में उन्हें फिर से खोजती है। उनका चरित्र दूसरों के लिए कई मैनों में प्रेरणात्मक रहा है।

सबसे पहले, उन्होंने जो कुछ भी चुना - अत्यधिक जिम्मेदारी के साथ चुना। चाहे वह सामाजिक कार्यक्रमों का हिस्सा बनना हो, या परिवार के सदस्यों की शादी की तैयारियों में सहायता करना हो या बस घर पर रात का खाना परोसना हो, मेरी माँ हमेशा उस भूमिका को सुनिश्चित तरीके से निभाती थीं । उनकी भागीदारी का स्तर सभी अपेक्षाओं को पार कर जाता था और वह प्रशंसा और सम्मान हासिल करने में सक्षम होती।

दूसरा, मनुष्य का वास्तविक स्वभाव एक दूसरे की देखभाल करना है। परिवार के सदस्यों द्वारा याद किए गए मेरी मां के कार्यों ने मानवीय समझ की इस विशेषता और अपने प्रियजनों के प्रति मेरी मां की भक्ति को स्पष्ट किया। वह अपनी दैनिक जरूरतों का त्याग कर दूसरों को समायोजित करना चाहतीं थीं । उनके बारे में कहानियों से मुझे पता चलता है कि यह छोटे बलिदान - एक घंटे पहले जागना, एक साथ खाने के लिए अपने खाने के समय को बदलना, यहां तक कि दूसरों की भलाई के लिए अपने प्लान्स छोड़ देना, और किसी की मदद के लिए मीलों दूर जाने के लिए तैयार होजाना। यह हमेशा छोटी, रोजमर्रा की चीजें होती हैं जो अन्य मनुष्यों की ज़न्दिगी में बदलाव लाती हैं। और इन्हे ही करना सबसे मुश्किल होता है। भगवद गीता जीवन के बारे में सोचने के लिए एक अच्छा ढांचा देती है – "देसा, काला, पात्रा"। यह कहता है कि जीवन में परिणाम तीन चीजों पर निर्भर हैंः स्थान, समय और परिस्थिति। जबकि हम निष्पक्ष रूप से स्थान और समय की पहचान कर सकते हैं, परिस्थितियों को केवल सामूहिक रूप से एक साथ जोड़ा जा सकता है - दोस्तों और परिवार के साथ। ऐसे मौके पर अपनी मां को याद करना मुझे खुशी से भर देता है - जहां लोगों की परिस्थितियां मेरी मां के कार्यों से परिभाषित होती हैं और वह अपने जीवन में मुस्कुराहट फैलाती हैं। उनका जीवन एक तरह से केवल एक है, लेकिन वह अन्य लोगों की यादों में और उनके जीवन के माध्यम से जीवित रहती है।

(र.क्र.3095)

होली

भरत चतुर्वेदी,'अचल', गुवाहाटी

पालागौं कर जोरी, श्याम मोसों खेलौ न होरी।। गउएँ चरावन को हम निकसीं, सासु ननद की चोरी।। सिगरी चूनरि मोरी रंग में न बोरौ एती अरज सुनौ मोरी ।। छीनि झपटि मोरे हाथ सों गागरि, जोर सों बहियाँ मरोरी।। जिय धड़कन मोरी साँस चलति है, देह कँपै गोरी गोरी।। अबीर गुलाल लपटि रह्यौ मुखसों, सारी रंग में बोरी। सासु हजारन गारी देयगी, बलमा जियत न छोरी ।। फाग खेलिकैं तुम मनमोहन, का गति कीन्हीं मोरी ।। सखियनि बिच बाबा दंन के द्वारें, होयगी मोरीं तोरी।।

***

आजु नगर में धूम मची है, हो होरी खेलत कुंवर कन्हाय। उठति कौंच मग बीच वृन्दावन, नील पीतपट रहे हैं चुचाय ।। बंनी झुकीं, अलक की झलकनि, मानो मेघ रहे झर लाय । बाज ताल मृदंग झाँझ ढफ, भेरि रबाब बीन सहनाय।

चंग उपंग खंजरी महुअरि, नुपूर धुनि सुनि नगर सिहाय। चातक मोरि कोकिला बोले, दादुर बोले हैं मदन जगाय । ऋतु बसन्त फूले बन उपवन, द्रुम द्रुम लता रही लपिटाय ।। इन्द्र कुबेर वरुण सनकादिक रविं-रथ ससि रथ चल न काय। जोगी जती तपी मुनि ग्यानी, उनहूँ के जोग रहे विसराय ।। सारद सेस महेश बखानत, उनहूँ पै हरि गति जानि न जाय। चिरजीवी ब्रजरात साँवरे 'सूर' विमल इतनौ जस गाय ।।

***

मति जाउरी आजु कोऊ पनियाँ भरन, मग रोकत ढोटा श्याम बरन डारत रंग भिजोवत अबर, मटुकी फोरत बीच धरन। मलत गुलाल हार गल टोरत, डर लागत मोहिं कंत डरन।। ग्वाल बाल सँग भी सखीरी, आगें परत नहिं मेरी चरन। फागुन भरि कोऊ जाउ कहूँ मति बैठि रहौ सब अपने धरन ।। झगरत लरत डरत ना नैकहु, कासों कहों को सुनै श्रवनन्न । हरिबिलास हरि ढीठ लँगरवा, सबसों लगै लँगराई करन।।

***

ब्रज में खिलन मति जाऊ, तुम पै कोऊ रंग डारि दैहै ये ब्रजवासी बड़े बिसघाती, मारग में इठलैहें। तिनके संग है जैहाँ बावरी, गोकुल जान न देहैं।। ग्वाल बाल सब मद के री माते, चहुँ दिसि सें घिरि ऐहैं। इक इक रंग सौ सौ पिचकारी, तुम्हरेहि सीस चर्देहै।। इतनी कहाँ मेरी मानौ दुलहिया, फिरि पाउँ पछितैहैं। 'भूदरदास' श्याम मिलि जैहै, नैन सों नैन मिलैहैं ।।

***

वन को चले दोऊ भाई, इन्हें कोई रोकौ री माई।। आगे आगे राम चलत है, पाछे लछिमन भाई। ताके पीछेचालति जानकी, शाब बरनि न जाई ।। राम बिना मोरी सूनी अयोध्या, लछिमन बिन ठकुराई। सौता बिना मोरी सूनी रसोइया, कौन करे चतुराई।। रिमझिम रिमझिम मेहा बरसै, पवन चलै पुरवाई। काऊ बिरछ तन भींजत होइंगे, सीता सहित दोऊ भाई ।। लंका जीति राम घर आये, घर घर बाजत बधाई। मात कौशल्या करति आरती, शोभा बरनि न जाई ।।

***

श्रवण सुनत कटि जात पाप जहँ, सीताराम खेलें होरी ।। कोन के हाथ कनक पिचकारी, को जा अबीर भरें झोरी ।। कौन से ये यह रंग बनायी, कौन की चूनरि रंग बोरी।। राम के हाथ कनक पिचकारी, लछिमन अबीर भरें झोरी। भरत शत्रुघन रंग बनायौ, सीता की चूनरि रंग बोरी।।

***

अब तो सखी फागुन ऋतु आयौ, ढफ गोपाल बजावै ।। केसरि अबीर गुलाल मलौ, मुख नंदलाल बुलावै ।। खेलों फाग श्याम सँग सजनी, जोर मनोज जनावै।। एक तौ डर मोहि सासु ननद कौ, दूजें लाज लजावै ।।

***

कहा बानि परी सैयाँ तोरी रे, मोसों खेलन आयो होरी ।। हम सों श्याम होरी बनि खेलत, और सखिन सों थोरी।। अबीर गुलाल के थार भरे हैं, मुख मसलन कों रोरी।। रचन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छवि, चिर जीवहु यह जोरी।।

***

अँखियन भरत अबीर, बीर मोरी पीर न जानै ।। हार तोरि गलगूँज मरोरी, लै अबीर मुख सानै ।। रोके सैं औरहु उरझत है, लै पिचकारी तानें।। 'ललित किशोरी' बरजत हारी, नंदनंदन नहिं मानें ।।

***

कान्हा तुमहींका ब्रजके इजारदार, मोपैरँग छिरकत पियबार-बार। रँग छिरकत मेरे कुमकुम मारत, अँगिया के करि दीन्है तारतार। करमेरी पकरि कलाई मेरीमसकी, चुलिया के करि दीन्हौ तारतार।।

***

– होलियों की पुस्तक रंग-सरस से साभार प्रेषित

शाखा समाचार

आगरा

महिला प्रकोष्ठ श्री माथुर चतुर्वेदी सभा आगरा (रजि) द्वारा डॉ. संगीता चतुर्वेदी, Indian menopause public awareness society और शूरा बायोटेक के सहयोग निःशुल्क गर्भाशय ग्रीवा कैंसर एवं रजोनिवृत्ति जागरूकता चिकित्सा शिविर सिकंदरा बोदला रोड स्थिति द जेल रेस्टोरेंट के बैंक्वेट हॉल में आयोजित करा गया। यहां सीबीसी, ब्लड शुगर आदि ब्लड टेस्ट भी निःशुल्क कराए गए. महिला प्रकोष्ठ श्री माथुर चतुर्वेदी सभा आगरा (रजि.) की संस्थापक और संयोजक वरिष्ठ ब्रजक्षेत्र भाजपा नेत्री निधि चतुर्वेदी ने बताया की इस शिविर के आयोजन का मूल उद्देश्य गर्भाशय कैंसर, लड़कियों और लड़कों दोनों में इस का अत्यंत आवश्यक टीकाकरण और महिलाओं से संबंधित समस्याओं के बारे में जागरूकता पैदा करना था। डॉ. संगीता, डॉ. संतोष, डॉ. संजना ने विषय को पूरी बारीकी और गहराई के साथ आसान भाषा और प्रोजेक्टर सचित्र प्रस्तुति के मध्यम से समझाया. महिलाओं के मन में उमड़ रहे प्रश्नों का और भ्रांतियाँ का निदान किया गया। शूरा बायोटेक से पवन जी ने बहुत ही सुंदर विषय के साथ जाता हुआ प्रेरक गीत प्रस्तुत कर माहौल को जीवंत कर दिया। कार्यक्रम के दौरान कॉफी नाश्ते और उसके बाद हाई टी की व्यवस्था की गई थी. आगे भी महिला प्रकोष्ठ द्वारा डॉ संगीता के साथ डॉक्टर्स के सहयोग से सरकारी और पब्लिक स्कूलों में मासिक धर्म और गर्भाशय ग्रीवा कैंसर संबंधि जागरूकता कार्यक्रम चलाये जायेंगे. प्रोग्राम की सुचारु और निर्बाध व्यवस्था बनाये रखने मे संस्था की अध्यक्ष शेफाली जी, उपाध्यक्ष रेनू जी, पल्लवी जी, बबीता जी, चारु जी, निहारिका जी, अंजलि जी, अंजलि मिश्रा जी का विशेष सहयोग रहा।

– **शेफाली चतुर्वेदी,** अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ

आगरा

दिनांक 26/01/2025 श्री माथुर चतुर्वेदी सभा आगरा रजि० एवं महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त आयोजन बटेश्वर तालगांव एवं होलीपुरा की यात्रा ने सफलता के झण्डे गाड़े हैं उसके लिए समस्त कार्यकारिणी को धन्यवाद जिस प्रकार से सभी बंधु बांधवों को अलग अलग स्थान से पटका रोली टीका लगाकर बोर्डिंग देना उससे पहले गरम गरम फीकी मीठी चाय के साथ स्वादिष्ट नाश्ता फिर बस में बैठने से पहले बेलकम किट जिस पर श्री माथुर चतुर्वेदी सभा आगरा रजि० एवं महिला प्रकोष्ठ छापा हुआ है जिसमें नाश्ते के डिब्बे के साथ पानी की बोतल एवं फल देना साथ साथ डोल बजा कर स्वागत करना एक अच्छी अनुभूति दे रहा था ढोल वाला यात्रा में साथ ही रहा और हर स्थान पर ढोल बजा कर अपनी उपस्थित दर्शाता रहा बटेश्वर बाबा के दर्शन के पश्चात भोले बाबा की आरती प्रसाद वितरण एवं सामूहिक पूजा के बाद समस्त सदस्यों के लिए नौका विहार के शानदार इंतेज़ाम के पश्चात सीधे तालगांव में पहुंच कर भाई अमित जी अंजलि जी के निवास पर विश्राम एवं चौबों का भोजन झोर भात सब्जी पूरी के साथ स्वादिष्ट मेवा युक्त खीर के सेवन के साथ साथ देहरी पर शगुन के लिए चतुर्वेदियों के ठेठ गीतों के साथ गाना बजाना सभी ने पसंद किया इसके पश्चात तालगांव के बुजुर्गों को पटका एवं पालागन की मोती माला पहना कर सम्मानित किया गया तालगांव से सीधे होलीपुरा पहुंच कर स्वामीजी के दर्शन के साथ साथ गुफा के भी दर्शन किए गए तथा आरती मे भाग ले कर प्रसाद का वितरण किया गया उसके बाद धर्मशाला पर भाई दिग्विजय दिग्गी द्वारा आयोजित फीकी मीठी चाय के साथ मठरी गरम गरम समोसा और पेड़ो का नाश्ते ने यात्रा में और आनंद भर दिया होलीपुरा में समाज के उपस्थित बुजुर्गों को पटका पालागन की मोती माला पहना कर सम्मानित किया वहां से लौट कर फतेहाबाद रोड पर मनीष जी के निवास पर रात्रि भोजन के बाद सभा के पूर्व अध्यक्ष भाई दिनेश मिश्रा जी का जन्म दिन धूम धाम से मनाया गया जिसमें अति उत्साहित सदस्यों ने ढोल की थाप पर नृत्य किया अंत में सभी बंधुओ को धन्यवाद के साथ विसर्जन किया गया जिस स्थान से बांधव बस में बैठे थे वहीं पर उतारा गया यात्रा बिना किसी विघ्न के संपन्न हुई सभी बंधुओ को ऐसे ही सहयोग का पालागन

– **मुकेश चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

गाजियाबाद

आप सभी को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। गाजियाबाद सभा 09 मार्च 2025 रविवार के दिन सुबह 10:00 बजे से सामुदायिक केंद्र लाजपत नगर साहिबाबाद, निकट शनि चौक गाजियाबाद में होली मिलन का आयोजन करने जा रही है। जिसमें आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित है।

– **प्रदीप चतुर्वेदी "संजू",** अध्यक्ष

गुरुग्राम

होली मिलन 9 मार्च को श्री माथुर चतुर्वेदी सभा गुरुग्राम की त्रैमासिक आयोजित बैठक दिनांक 9 फरवरी को उपस्थित

सदस्यों ने एक मत निर्णय लिया। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी होली मिलन समारोह 9 मार्च को सेक्टर 15 कम्यूनिटी सेंटर,अहमद हॉस्पिटल के पीछे गुरुग्राम में आयोजित किया जाएगा। होली मिलन उपरांत स्वादिष्ट भोजन सभी के लिए व्यवस्था की गई है। होली मिलन समारोह में समाज के सभी सदस्यों से अनुरोध किया गया है अपने सामाजिक मित्रो और परिवार के साथ उपस्थित होकर समारोह को सफल बनाए। बैठक में सर्वश्री अनुराग जी, मनोज जी, नील कांत जी,अभय राज जी, डॉ शरद जी व श्रीमती नीतिका चतुर्वेदी जी आदि उपस्थित रहे। – **अभय राज,** सचिव

लखनऊ

लखनऊ के प्रसिद्ध के०डी० सिंह बाबू स्टेडियम के विशाल प्रांगण में रविवार 2 फरवरी 25 को मंडल के वार्षिक खेलकूद का आयोजन हुआ, जाती सर्दी और बसंत बयार में रोमांचित महिलाएं, पुरुष एवं युवा वर्ग बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए आयोजन की सफलता की कहानी बयां कर रहे थे। स्टेडियम में आयोजन का श्रेय शिशिर जी के योगदान से ही संभव हो सका। आयोजन में खेलकूद मंत्री स्वर्णेष जी, संस्कार जी के साथ महिलाओं में बबिता जी, तनूजा जी,प्रतीची जी तथा पुरुषो में शिशिर जी, प्रवेश जी,विपिन जी, सौरभ जी, गौरव जी आयोजन को सफल बनाने में योगदान दे रहे थे। खेलकूद के साथ ही एक 20-20 क्रिकेट मैच शुभम जी एवं आर्यन जी की टीम के बीच खेला गया।मैच के अंपायर तरुण जी एवं हर्षवर्धन जी रहे।मंडल ने स्वादिष्ट खान पान की भी सुंदर व्यवस्था की थी।

भोजन के उपरांत 2 फरवरी 25 को ही मंडल की मासिक बैठक आयोजित की गई, मीटिंग की शुरुआत अजय के मंगलाचरण से हुई, उसके बाद प्रसिद्ध गायक सौरभ जी ने अन्नू जी के साथ होली गायन की प्रस्तुति दी। फिर मंत्री की अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष प्रवेश मुन्ना जी ने विगत मीटिंग की रिपोर्ट प्रस्तुत कर चर्चा प्रारंभ की। सदन ने चर्चा के बाद रिपोर्ट की पुष्टि कर दी। इसके बाद अध्यक्ष अजय जी ने आगामी रविवार 23 मार्च 25 को लखनऊ में महासभा कार्यकारिणी की मीटिंग का प्रस्ताव रखा,जिस पर चर्चा प्रारंभ करते हुए वरिष्ठ सदस्य पदम जी, नवीन जी, विपिन जी ने इसका समर्थन किया। चर्चा में दिलीप जी, मनीष जी, ललित जी, पंकज जी,यदुवेश मिंटू जी, प्रवेश जी, सौरभ जी,दिवस जी तथा शिशिर जी,पुत्तन जी ने भी अपने अपने विचार प्रकट किए, संक्षिप्त विरोध के बाद बहुमत से कार्यकारिणी मीटिंग आयोजित करने का निर्णय लिया गया। सदन ने अध्यक्ष अजय को महासभा अध्यक्ष को औपचारिक निमंत्रण भेजने के लिए अधिकृत किया। मंत्री नमन जी मीटिंग में शहर से बाहर होने के कारण शामिल नहीं हो सके, लेकिन नमन जी ने फोन पर ही मीटिंग आयोजित करने का समर्थन करते हुए हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।अंत में सदन ने शिशिर जी एवं मंडल अध्यक्ष अजय जी एवं उनकी कार्यकारिणी को खेलकूद एवं मीटिंग के सफल आयोजन के लिए धन्यवाद देने के साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। – **अजय चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

पटना

दिनांक 27-10-2024 को श्री माथुर चतुर्वेदी, शाखा सभा, पटना का गठन श्री प्रभात चतुर्वेदी के निज आवास पर किया गया चतुर्वेदी। कार्यक्रम का उद्घाटन गायत्री-मंत्रोचारण एवं गणेश वंदना के साथ किया गया। उद्घाटन भी मोहन चतुर्वेदी के द्वारा गणेश जी के पूजन व वरिष्ठ श्रीमती उमा चतुर्वेदी के द्वारा दीप-प्रज्वलन के साथ किया गया। इसके बाद श्री प्रभात चतुर्वेदी द्वारा स्वागत उदबोधन किया गया। फिर हमारे वरिष्ठ श्री मोहन चतुर्वेदी द्वारा कुछ विचार व सुझाव रखे गए और आगे की रूपरेखा के बारे में सभी से विमर्श किया गया। कार्यक्रम में कुछ लोगों की आजीवन सदस्यता फार्म के साथ ली गई। कार्यक्रम में श्री श्याम चन्द्र चतुर्वेदी, श्री मुकेश चतुर्वेदी, श्रीमती

माधुरी, श्रीमती तनुजा, श्रीमती तृप्ति, श्री समीर, श्रीमती अर्चना व श्रुति उपस्थित थे। साथ ही पटना शाखा के अंतर्गत निम्नलिखित पदों पर सर्वसम्मति से सदस्यों का चुनात किया गया। तदोपरांत स्वादिष्ट जलपान के साथ सभा का समापन किया गया। **संरक्षक** :- श्री मोहन चलैवेंदी (तालगांव) एवं श्रीमती उमा चतुर्वेदी (करौली), **अध्यक्ष** – श्री समीर चतुर्वेदी (मैनपुरी),उपाध्यक्ष :-श्री मुकेश चतुर्वेदी (करोली),कोषाध्यक्ष :- श्री श्याम चन्द्र चतुर्वेदी (तालगाँव), **सचिव** :- श्री प्रभात कुमार चतुर्वेदी (तालगाँव), **विशेष** :- प्रथम बार शाखा-सभा को महासभा से संबद्ध किया गया। इसके लिए उपयुक्त फॉर्म व शुल्क प्रेषित कर सूचित किया गया। समीर चतुर्वेदी (सभापति), पटना (बिहार)

हरिद्वार

बड़े ही हर्ष का विषय है कि हरिद्वार में नई सभा का गठन किया गया है जिसके अध्यक्ष श्री दिलीप कुमार चतुर्वेदी चुने गए। श्री अमित चतुर्वेदी, मंत्री व श्री अभय चौबे जी, कोषाध्यक्ष चुने गए। साथ ही उन्होंने महासभा की संबद्धता भी ग्रहण की है। संपूर्ण कार्यकारिणी अगली अंक में प्रकाशित की जाएगी।

– **दिलीप कुमार चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

समाज समाचार

■ चि.यश चतुर्वेदी सुपुत्र श्री अरुण चतुर्वेदी (उदयपुर) को सी.ए. बनने पर बिरला ऑडिटोरियम जयपुर के दीक्षांत समारोह में सी ए की उपाधि प्रदान की गई।

■ श्रीमती नीलम जी पत्नी श्री ललित जी (तरसोखर/लखनऊ) ने अपने पौत्र चि० वेद सुपुत्र श्रीमती सुप्रीती एवं श्री प्रतीक जी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में अन्नपूर्णा योजना हेतु रु 2100/ प्रदान किए। (र.क्र.3096)

■ हमारी माताजी श्रीमती स्व. श्रीमती शकुन्तला चतुर्वेदी पत्नी स्व. प्रहलाद नारायणजी की द्वितीय पुण्यतिथी (9.02.2025) पर श्री मनोज जी ने अन्यपूर्णा निधि में 3000 रूपये सहयोग राशि प्रेषित किये। (र.क्र.3088)

■ स्वर्गीय श्री विनोद कुमार चतुर्वेदी एडवोकेट (तरसोखर/कटनी) की स्मृति में उनके पुत्र प्रशान्त चतुर्वेदी–डॉ. रश्मि चतुर्वेदी (कटनी–म.प्र.) द्वारा 24000/– अन्नपूर्णा सहायतार्थ दिये गए। (र.क्र.3086)

■ कुमारी खुशी चतुर्वेदी पुत्री श्रीमति नीता–मनोज (सागर/आगरा) के दिनाँक 4 जनवरी को 22वे जन्मदिन के अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 1100/– प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.3012)

■ पूज्य पिताजी स्व. प्रहलाद नारायण पुत्र स्व. उमादत्त शास्त्री (चंद्रपुर/ आगरा) की दिनांक 8 जनवरी 2025 को 42वीं पुण्यतिथि के अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 1100/– प्रदान किये। (र.क्र.3012)

बिछड़े स्वजन

* श्रीमती नूतन चतुर्वेदी पत्नी स्व. राजीव चतुर्वेदी,राजा पुत्रवधू स्व. यतीश चंद्र जी (पुरा/कोलकाता/इंदौर) का निधन इंदौर में हो गया।
* मेजर उषा चतुर्वेदी पत्नी स्व. ध्रुव कुमार चतुर्वेदी (कमतरी/लखनऊ) का स्वर्गवास 31 जनवरी 2025 को हो गया।
* श्रीमती जया चतुर्वेदी (डॉली) पत्नी श्री कोमलेश चतुर्वेदी (दानपुर) का दिनाँक 03 फरवरी 2025 को निधन हो गया।
* श्री नितिन चतुर्वेदी पुत्र स्व.श्री चेतन चतुर्वेदी (फरौली/जयपुर) का असामयिक निधन 04 फरवरी 2025 को हो गया।
* श्रीमती मंजू चतुर्वेदी पत्नी श्री हरि नाथ चतुर्वेदी, (मथुरा/जयपुर) का देहावसान 12 फरवरी को नोएडा में हो गया।
* श्री योगेश कुमार चतुर्वेदी (कछपुरा/बदायूं) का स्वर्गवास दिनाँक 10 फ़रवरी 2025 को बदायूँ में हो गया।
* श्री अवधेश चतुर्वेदी पुत्र स्व. घनश्याम दास चतुर्वेदी (अब्बो दादा) का स्वर्गवास दिनाँक 15 फरवरी 2025 को हो गया।
* कायमगंज निवासी श्री मुकुल कुमार जी सुपुत्र स्व यतीश चंद्र जी का 69 वर्ष की आयु में लखनऊ में 13 फरवरी 25 को निधन हो गया।
* सुश्री कृष्णा चतुर्वेदी (बुलंदशहर/भोपाल) का दिनाँक 16 फरवरी 2025 को देहांत हो गया।
* श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री ऋषिकेश चतुर्वेदी (कमतरी) का निधन दिनांक 16 फ़रवरी 2025 को नोएडा में हो गया।
* श्री ओंकार नाथ जी (तालगांव/ लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 19 फरवरी 25 को हो गया।
* लखनऊ मंडल के वरिष्ठतम संरक्षक श्री महेश चंद्र जी मैनपुरी, का आज 20 फरवरी 25 को लखनऊ में देहावसान हो गया।
* श्री ओंकार नाथ जी (तालगांव/ लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 19 फरवरी 25 को हो गया।
* श्री नरेश चंद्र चतुर्वेदी (चंद्रपुर/फरीदाबाद) का देहावसान दिनाँक 20 फरवरी 2025 को हो गया।
* श्री छोटेलाल लाल चतुर्वेदी पुत्र स्व.श्री मनमोहन लाल जी चतुर्वेदी,(जयपुर) का निधन दिनाँक 21 फरवरी 2025 को हो गया।
* सुश्री कांति चतुर्वेदी पुत्री स्व. रामेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी (कोटा,राज.) का स्वर्गवास दिनांक 22 फरवरी को जयपुर में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्री विनोद कुमार चतुर्वेदी

(15.03.1937 - 11.01.2025)

सुपुत्र स्व. श्री विश्वनाथ चतुर्वेदी - स्व. मोहिनी देवी (तरसोखर/कटनी)

बिछड़ा कुछ इस अदा से कि रुत ही बदल गई
इक शख़्स सारे शहर को वीरान कर गया

श्रद्धानयन

पुत्र-पुत्रवधु	:	प्रशांत-रश्मि चतुर्वेदी
पुत्री-दामाद	:	सोनल-निशीत चतुर्वेदी
भतीजा-बहू	:	गुंजन चतुर्वेदी पत्नी स्व. अमित चतुर्वेदी
भतीजी-दामाद	:	ईरा-शैलेश
पौत्री-पौत्र	:	खुशबू, पीयूष, अभ्युदय, आंजनेय
धेवती	:	श्रेया चतुर्वेदी

एवं समस्त कटनी परिवार

निवास :- प्रशांत चतुर्वेदी मदन मोहन चौबे वार्ड, कटनी (म.प्र.) - 483501
मोबाइल - 9425154074, 7999405434

(र.क्र. 3081)

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

जन्म
23.08.1953

निर्वाण
07.01.2025

स्व0 श्रीमती कामनी चतुर्वेदी

पत्नी हृदय नाथ चतुर्वेदी

शोक संतप्त

पति : हृदय नाथ चतुर्वेदी
भाभी : पुष्पा उषा
भाई : सूर्यकांत महिमा,राकेश रेखा
पुत्र व पुत्रवधु : नागेंद्र मंजू,दिनेन्द्र गुंजन
भतीजे : दीपक शोभा,यतीन्द्र रचना,यशवंत भावना
सुदेश अनामिका ऋषिकांत नीलम,
शिखर नेहा सौरभ रेनू
पौत्र व प्रपौत्री:देविका,देवांश एवं समस्त कोठी कैस्त परिवार

स्थान कोठी कैस्त जसवंतनगर इटावा
मो.9412613615,7895423102

(र.क्र. 3077)

श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (बब्बल)

(पुरा–कन्हैरा/होलीपुरा/रिषड़ा)

जन्म : 12 मई 1979 – गन्तव्य विदाई : 14 जनवरी 2025

नैनम छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनम दहति पावकः।
नचौनमक्लेदयन्तापो न शोषयति मारुतः ।।

विनम्र श्रद्धांजली

पति : सूर्य कान्त चतुर्वेदी (मोहन)
सास : श्रीमती सुधा चतुर्वेदी
जेठ–जिठानी : अभय राज – नीतिका चतुर्वेदी
पुत्र/पुत्री : वैभव, भूमिका चतुर्वेदी
भतीजे : श्रेयश, श्रेयांश चतुर्वेदी

अभय राज चतुर्वेदी
म.नं. 1043, सेक्टर 39, साइबर पार्क
के पीछे, गुरूग्राम (हरियाणा)
9999161818, 9911821818
abhayraj.chaturvedi@gmail.com

श्रीमती सुधा चतुर्वेदी
जनकपुरी, भगवान आश्रम
पोस्ट – टूण्डला – 283204
जिला – फिरोजाबाद (उ.प्र.)
09330708625

सूर्य कान्त चतुर्वेदी (मोहन)
49/83, रविन्द्र सारणी
पोस्ट – रिसड़ा – 712248
जिला – हुगली (प.ब.)
09830181248, 09339340297

(र.क्र. 3085)

On your 1st Death Anniversary

Beloved father, husband, grandfather, and friend,
Your wisdom, kindness, and unwavering strength continue to guide and inspire us every day.
Your love and warmth remain etched in our hearts, a light that will never fade.
We honor your memory with love and gratitude, cherishing the legacy you have left behind.

Late Manoj Chaturvedi

15/07/1955 – 20/02/2024

Elder Daughter and son-in-law	:	Ritika and Arjun
Grandson	:	Rudraveer
Grand Daughter	:	Aarika
Younger Daughter and Son-in-law	:	Sheena and Tarun

And the deeply grieving Chaturvedi Family.

Flat No. 1204, Mayur Utsav Apartment,
Bithoor Road, Kalyanpur, Kanpur – 208017
(Mobile No. 8551853083)

(र.क्र. 3087)

चतुर्वेदी शाखा सभा की ओर से होली मिलन समारोह मे मतदान जागरुकता की शपथ लेते पदाधिकारी व सदस्य • सौ.-सभा पदाधिकारी

(र.क. 3092)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' मार्च 2025

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak2024.chandrika@gmail.com